वृन्दा

वर्ष 21, अंक-8, पत्रिका पंजीकरण संख्या MP HIN 2003/11939

अगस्त : 2023

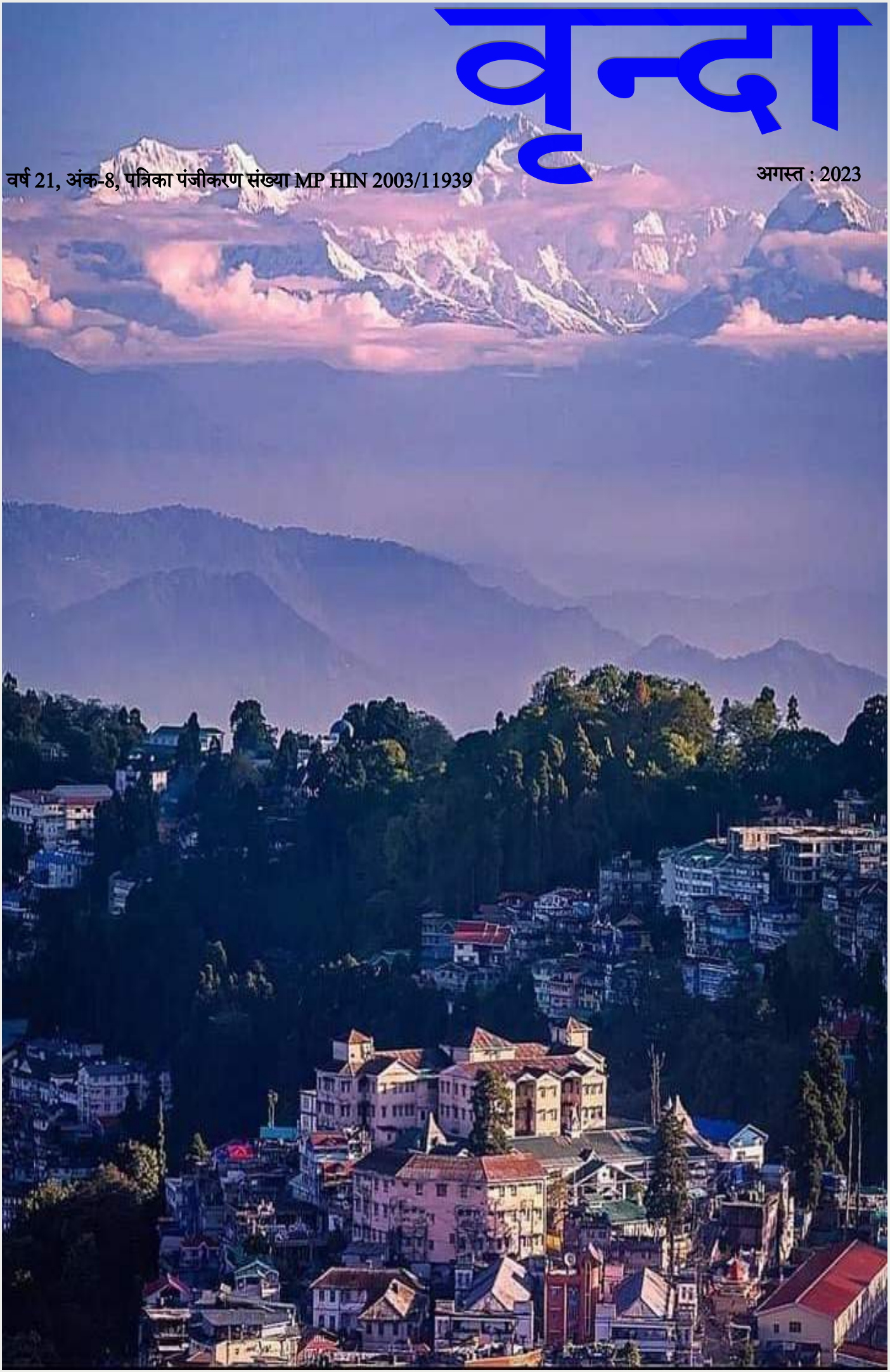

Red No M. P. HIN 2003/11939

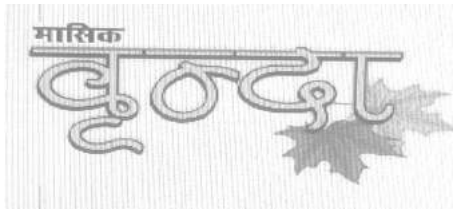

सम्पादन परामर्श
श्री सुधेंदु ओझा-07701960982
सम्पादक
अंजना छलोत्रे
-84 61912125
कार्यकारी सम्पादक
आशा शैली- 7055336168
सम्पादकीय कार्यालय
जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039
मो-9827034165

मुद्रक/प्रकाशक/स्वत्वाधिकारी
सम्पादक -अंजना 'सवि'
जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039
वृन्दा के सभी विवादों का वैधानिक क्षेत्र भोपाल रहेगा
लेखन सामग्री के लिए सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

मूल्य-एक प्रति 12/-,
वार्षिक 120/-,
संस्था और पुस्तकालय हेतु
120/- वार्षिक

इस अंक में

विधा	लेखक	पृष्ठ
सम्पादकीय		
और निर्वासन खत्म हो गया	-डॉ.रामावतार सागर	4
कविता		
मुस्कुरा कि दिन .....साधना सोलंकी		6
अखबार	राजकुमार जैन 'राजन'	7
ऐसा गीत लिखना....रेखा चमोली		8
जीने की कोशिश तो कर....पूनम तिवारी		8
पानी ही पानी है ....गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'		9
पावस	रमेश चन्द्र	10
तन्हाइयों से गले.....राजेश्वरी जोशी पंत		10
अक्षय ऊर्जा को अपनाना.....	-प्रत्यूष शर्मा	11
बच्चे की प्रथम शिक्षक और....हेमंत चौकियाल		13
समसामयिक		
विकसित देशों को.....	-डॉ. उमेश प्रताप वत्स	14
आज के	-डॉ. गोपाल प्रसाद पाठक 'राज'	16
पाण्डव गुफा का जंगल	-डॉ. राकेश 'चक्र'	18
दायरा	-गिरजा कुलश्रेष्ठ	21
हफ्ता	डॉ. दिनेश पाठक 'शशि'	21
तेहरवीं के पहले (कहानी)	जोगेश्वरी सधीर साहू	22
आजादी का अमृत महोत्सव...	डॉ. आराधना मिश्रा	25
धरावाहिक उपन्यास/ पारस	आशा शैली	27
सात मीठे पानी की झील	लोकेष्णा मिश्रा	30
लगन (लघुकथा)	अंजना छलोत्रे 'सवि'	31

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, तथा स्वत्वाधिकारी सम्पादक अंजना द्वारा वृन्दा के लिए खो प्रिंटर्स तलैया चौक से मुद्रित व जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल 462 039 से प्रकाशित।

सम्पादकीय

प्रिय पाठको,

1947 में भारत ब्रिटिश शासन से आज़ाद हुआ और एक स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्र बना। 15 अगस्त भारत की आजादी के लिए हमारे पूर्वजों द्वारा दिए गए बलिदान को याद करने का दिन है। यह भावी पीढ़ियों के लिए कड़ी मेहनत से अर्जित स्वतंत्रता की रक्षा और संरक्षण करने के हमारे कर्तव्य की याद दिलाता है।

15 अगस्त भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण दिन है। यह वह दिन है जब भारत ने लम्बे संघर्ष के बाद ब्रिटिश शासन से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की थी। यह दिन भारत में बड़े उत्साह और देशभक्ति के जज़्बे के साथ मनाया जाता है। दिन का मुख्य कार्यक्रम दिल्ली के लाल किले से प्रधानमंत्री का राष्ट्र के नाम संबोधन है। इस दिन लोग राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं, राष्ट्रगान गाते हैं और उन शहीदों को सलाम करते हैं जिन्होंने हमारे देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है। इस दिन को मनाने के लिए स्कूलों और कॉलेजों में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। यह उस कड़ी मेहनत से मिली आजादी को याद करने और जश्न मनाने का दिन है जो आज हमें मिली है। यह भावी पीढ़ियों के लिए कड़ी मेहनत से अजिर्त स्वतंत्रता की रक्षा और संरक्षण करने के हमारे कर्तव्य की याद दिलाता है।

विश्व मानवतावादी दिवस हर साल 19 अगस्त को मनाया जाता है। यह मानवीय सेवा में अपनी जान गंवाने वाले लोगों को पहचानने और सम्मान देने और जरूरतमंद लोगों की मदद करने की हमारी सामूहिक जिम्मेदारी की याद दिलाने का दिन है। यह मानवता की भावना और दूसरों की मदद के लिए कार्रवाई करने की हमारी साझा जिम्मेदारी का जश्न मनाने का भी दिन है। इस दिन, हम सभी को मानवता और एकजुटता के मूल्यों पर विचार करने और जरूरतमंद लोगों की मदद करने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करने के लिए कुछ समय निकालना ही होगा। ऐसा करके, हम सभी के लिए एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत दुनिया बनाने में मदद कर सकते हैं। विश्व मानवतावादी दिवस एक अनुस्मारक है कि हम सभी को कठिन समय में एक-दूसरे की मदद और समर्थन करने का प्रयास करना है। हमें इस दुनिया को सभी के लिए एक बेहतर जगह बनाने के लिए एक समुदाय के रूप में एक साथ आना है।

इसी माह संस्कृत सप्ताह 20 से 25अगस्त में मनाया जाता है यह भाषा भारत की एक प्राचीन भाषा है और इसे सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी माना जाता है। यह अत्यधिक समृद्ध भाषा है। साहित्य, कला और दर्शन के कई महान कार्यों के लिए प्रेरणा का स्रोत रही है। यह सप्ताह विभिन्न गतिविधियों जैसे कि संस्कृत श्लोकों का पाठ, संस्कृत व्याकरण पर व्याख्यान, संस्कृत निबंध लिखना और सांस्कृतिक प्रदर्शन के साथ मनाया जाता है। यह लोगों के लिए संस्कृत के महत्व और भारतीय पर इसके प्रभाव पर विचार करने का भी समय है।

20 अगस्त को भारत में अक्षय ऊर्जा दिवस के रूप में व विश्व में ओजोन दिवस के रूप में मनाया

जाता है। यह नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है। सौर, पवन, भूतापीय, ज्वारीय और बायोमास जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग के बारे में जागरूकता बढ़ाने और प्रोत्साहित करने के लिए 2015 में नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा अक्षय ऊर्जा दिवस की शुरुआत की ग थी। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे किसी भी ग्रीनहाउस गैसों या प्रदूषकों का उत्पादन नहल्ल करते हैं। वे जीवाश्म ईंधन की तुलना में ऊर्जा का अधिक सुरक्षित और टिकाऊ स्रोत भी प्रदान करते हैं।

यह ओजोन परत की कमी और इसकी सुरक्षा के लिए उपाय करने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाने का दिवस है। ओजोन वायुमंडल में प्रा तिक रूप से पा जाने वाली गैस है जो पृथ्वी को सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी विकिरण से बचाती है। यह एक ढाल है जो हमें त्वचा कैंसर और अन्य हानिकारक बीमारियों से बचाती है। क्लोरोफ्लोरोकार्बन के निकलने के कारण ओजोन परत का क्षय हो रहा है, जो कुछ औद्योगिक और उपभोक्ता उत्पादों से निकलता है। हमें इन पदार्थों की रिहा को कम करने और ओजोन परत को और अधिक क्षरण से बचाने के लिए उपाय करने की आवश्यकता है। हमें हानिकारक गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का भी उपयोग करना होगा।

– अंजना छलोत्रे

चण्डीगढ़ में समाचार क्यारी के सम्पादक एवं सह सम्पादक नीलिमा त्रिखा के साथ

और निर्वासन खत्म हो गया

-डॉ.रामावतार सागर

बड़े जोर से चीखी थीं जीजी, जब उन्होंने देखा कि छोटी सीढ़ियों से फिसलती जा रही है। तेज कदमों से चलती हुई जीजी जा पहुँची अपनी प्यारी छोटी के पास। ''देखूँ! कहीं चोट तो नहीं लगी?'' बड़े प्यार से बाँह पकड़ उठाते हुए जीजी ने कहा। लगभग सुबकते हुए छोटी बामुश्किल बोल पायी थी।

''नहीं, ठीक हूँ जीजी। बस ऐसे ही पैर फिसल गया था।'' लगभग रुआँसी होती छोटी ने बताया। अचानक यूँ सिटीमॉल में जीजी को सामने पाकर छोटी थोड़ी सकपकाई जरूर पर संभलते हुए पूछा, ''आप यहाँ जीजी?''

''हाँ थोड़ा घरेलू सामान खरीदना था बस इसीलिए.....।'' थोड़ी देर दोनों के बीच सन्नाटा बना रहा। इसी सन्नाटे के दौरान दोनों ही के दिलो-दिमाग पर कई चित्र एक साथ आये और चले भी गये। छोटी की आँखों के सामने अचानक गले में फूल-माला से लदी जीजी की तस्वीर और बाबूजी का जोर-2 से चीखना-चिल्लाना चलचित्र की भाँति दौड़ने लगा।

''निकल जाओ मेरे घर से.....सारी बिरादरी में नाक कटवा कर अब क्या लेने आयी हो?'' कहते हुए बाबूजी अचेत हो गये थे। आम मध्यमवर्गीय परिवार की चिंता रोटी से ज्यादा इज्जत की होती है, यह आज दिखलायी दे रहा था। जो लोग कभी यह पूछने घर नहीं आये कि आज खाना बना भी है या नहीं, वो जमाने को कोसते हुए बाबूजी की पीड़ा और बढ़ाने के लिए आ जाते। बातें संस्कारों से शुरू होकर टी.वी. चैनलों से गुजरते हुए वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर आकर खतम भी हो जातीं पर बाबूजी की तबीयत में थोड़ा भी सुधार नहीं दीखता था और जीजी का कसूर बस इतना ही था कि उम्र के इस पड़ाव पर आखिर उनकी भी नज़रें फिसल गयी। कॉलेज में साथ ही पढ़ने वाले रोहित को कब जीवनसाथी बना बैठीं यह पता ही नहीं चला। बाबूजी की तमाम उम्मीदों को झटकारते हुए जीजी ने रोहित के साथ रहने का फैसला भी ले लिया। जब जीजी के बाद छोटी पैदा हुई तभी से बाबूजी जीजी को ही अपना बेटा मानने लगे थे। उसकी सुख-सुविधाओं का ध्यान भी लड़कों की तरह ही रखा जाने लगा था। बाबूजी के सपने अब जीजी की आँखों में दिखलाई देने लगे थे और अब? अचानक सब सपने बिखरते-से दिखलायी देने लगे थे। जीजी दबे पाँव वापस लौट गयी थीं और बाबूजी ने तब से बिस्तर को अपना स्थायी ठिकाना बना लिया था। तब से लेकर आज तक जीजी का संबंध घर-परिवार से टूटा हुआ था। एक प्रकार का पारिवारिक निर्वासन झेल रही थी जीजी। क्योंकि प्रेम-विवाह को रोहित के घर वाले भी कहाँ स्वीकार कर पाये थे। ऐसे में अपनी अलग दुनियाँ बसाने के सिवा कोई चारा भी नही था दोनों के पास। बी. कॉम. की पढ़ाई पूरी करने के बाद जीजी बैंक में सर्विस करने लगी थीं और रोहित राज्य की प्रशासनिक सेवा में सिलेक्ट हो प्रशिक्षण पा रहा था।

''और तुम यहाँ कैसे छोटी?'' अपने आप को सँभालते हुए जीजी ने पूछा तो छोटी की आँखों से आँसू बहने लगे।

''मैं यहीं मॉल के एक शोरूम में सेल्स गर्ल की जॉब करती हूँ जीजी।" आपके जाने के बाद बाबूजी को हार्ट अटैक आ गया था। उनको सँभालने का जिम्मा और परिवार को चलाने की जिम्मेदारी दोनों एक साथ आ गयीं। माँ गृहस्थी के कामों व्यस्त रहती हैं, सो हमारे पास और कोई चारा नहीं रह गया था जॉब करने के सिवा।"

थोड़ी देर की चुप्पी के बाद जीजी बोली, ''ठीक है छोटी! अभी तो चलती हूँ।" और इतना कहकर जीजी मॉल से बाहर निकल गयी। सपाट चलती जिन्दगी में यकायक यूँ जीजी के आ जाने से एक बार फिर हलचल-सी दिखलाई देने लगी। अब जीजी अक्सर मॉल में आती तो छाटी से जरूर मिलती और पिताजी के हाल-चाल पूछती। जीजी को पिताजी की हालत पर बड़ा तरस आता लेकिन पिताजी की हठधर्मिता के आगे बेबस थी। वो यह अच्छी तरह से जानती थी कि पिताजी उसे कभी स्वीकार नहीं करेंगे। सब कुछ हालात और वक्त पर छोड़ कर जीजी अब अपनी गृहस्थी में खुश थी। यह अलग बात है कि पिताजी की दवाइयों का जिम्मा अब जीजी ने ही उठा लिया था।

''देख छोटी! पिताजी को कभी भी मत बताना कि दवाइयों का खर्च में देती हूँ। वे कभी स्वीकार नहीं करेंगे।" अपनेपन से जीजी ने कहा।

''ठीक है जीजी।" छोटी ने आश्वासन दिया। जीजी के जाने के बाद सबसे ज्यादा एक चीज की कमी वह शिद्दत से महसूस करती थी और वो यह थी कि मॉल में नौकरी करने से उसकी पढ़ाई जो छूट गई थी। यह तो वह भी जानती थी कि अब नियमित रूप से अध्ययन करना उसके लिए मुश्किल है लेकिन आगे पढ़ने की उसकी लालसा मजबूरी के आगे दबी-दबी सी थी। बाबूजी उसे उच्च शिक्षा दिलाना चाहते थे। खूब पढ़ाना चाहते थे, लेकिन समय के आगे किसका जोर चलता है। पढ़ने-लिखने की उम्र में उसे घर संभालना पड़ रहा था। जीजी भी यह सब जानती थी कि बाबूजी छोटी को खूब पढ़ाना चाहते थे। रोहित प्रशिक्षण पूरा कर प्लेसमेंट की प्रतीक्षा कर ही रहा था कि उसे शहर में स्थित दूरस्थ शिक्षा के विश्वविद्यालय में रजिस्ट्रार लगा दिया गया। अब जीजी और जीजा जी दोनों ही नौकरी में थे। रोहित को विश्वविद्यालय के परिसर में ही एक फ्लैट मिल गया था। वहाँ से जीजी का बैंक भी ज्यादा दूर नहीं था, सो दोनों ने वहीं रहने का निश्चय किया।

अब छोटी भी कभी-कभी अपनी जीजी और जीजा जी से मिलने आया करती थी। एकदिन रोहित ने सुझाव दिया कि क्यों न छोटी को दूरस्थ शिक्षा से आगे की पढ़ाई करवाई जाये। इतने दिन रजिस्ट्रार की नौकरी करते-करते रोहित दूरस्थ शिक्षा की महत्ता को भलीभाँति समझ गया था। उसने तुरंत साली साहिबा से परामर्श कर उसे आगे की पढ़ाई के लिए तैयार कर लिया। रोहित के मार्गदर्शन और जीजी के प्रोत्साहन से छोटी ने बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश लेकर एकबार फिर अपनी पढ़ाई शुरू कर दी। बी.ए. के विषय उसने वही लिए जो रोहित के थे, कारण स्पष्ट था कि नौकरी की भागमभाग में उसे पढ़ने का समय नहीं था इसलिए अवकाश के दिनों में वह अपनी जीजी के यहाँ घंटे दो घंटे जाकर रोहित से पढ़ लिया करती थी। उसने अपने माता-पिता को बता दिया था कि उसने दूरस्थ शिक्षा से बी.ए. में प्रवेश ले लिया है।

देखते-देखते तीन वर्ष का समय कैसे व्यतीत हो गया, पता ही नहीं चला और छोटी ने बी.कॉम. में स्नातक की डिग्री हासिल कर ली। रोहित के साथ मिलकर उसने भी प्रशासनिक सेवा की तैयारी शुरू कर दी। खूब मन लगा कर तैयारी करने का परिणाम भी सुखद आया और छोटी राज्य की प्रशासनिक सेवा में चुन ली गई। अब उसे थोड़े

समय बाद ही प्रशिक्षण के लिए जाना था लेकिन वद्ध माता-पिता को अकेले छोड़कर जाना मुश्किल हो रहा था। फिर एकदिन ऐसा भी आया जब छोटी को सब कुछ सच-सच बताना पड़ा। उसने माँ-बाबू जी को यह भी समझाया कि जीजी ने रोहित के साथ शादी कर के कोई गलत फैसला नहीं किया। रोहित निहायत ही काबिल और होनहार इंसान है। जीजी ने देखभाल कर ही रोहित के साथ जीवन बिताने का फैसला लिया है। समय के साथ बाबूजी का गुस्सा भी अब कम हो गया था, साथ-साथ ज़माने में आए खुलेपन से भी बाबूजी परिचित हो गए थे। वे अब भलीभांति जान चुके थे कि संतान के फैसले अगर सही हो तो उन्हें स्वीकार करने में को परेशानी नहीं होनी चाहिए। इधर बीते सालों में आस-पड़ोस के परिवारों में भी प्रेम विवाह हुए थे, लेकिन सब के सब जीजी की तरह सफल नहीं थे। बाबूजी ने ईश्वर का धन्यवाद दिया कि उन्हें इतनी अच्छी संतानें दी थी। फिर एकदिन छोटी अपनी जीजी और जीजाजी को घर ले आई। उसे विश्वास था कि अब बाबूजी जीजी को अपना लेंगे।

''आओ बेटा आओ तुम्हारा इस घर में स्वागत है। लाख चाहने पर भी मैं आप जैसा दामाद नहीं ढूंढ पाता अपनी बेटी के लिए।"-रुंधियाये गले से बाबूजी ने कहा।" कहते हुए बाबूजी ने जीजी और जीजाजी को अपनी बाँहों में भर लिया। माँ पूजा की थाली लिए अपने बेटी-दामाद का स्वागत कर थी और खुशी के आँसुओं के साथ ही जीजी का निर्वासन भी खत्म हो गया था।

कोटा, राजस्थान
ramavtar.gcb@gmail.com

मुस्कुरा कि दिन खुशगवार है

-साधना सोलंकी 'राजस्थानी'

शिकारी नहीं शिकार क़सूरवार है
जुर्म पता नहीं सजा का हकदार है

कातिल बहरूपिए आस पास ही
पहचान कठिन मुखौटों की भरमार है

अंधेर नगरी चौपट राजा का समां
तमाशा यहाँ पग-पग गुलज़ार है

दो नावों के सवार अब डूबते नहीं
मंजर एक हसीन दूजा नागवार है

बेसुरे बाजे में अपनी धुन तलाश लो
मुस्कुरा कि दिन अभी भी खुशगवार है!

एच- 52, सिद्धार्थ नगर
सवा गैटोर, जगतपुरा
जयपुर-302017
दूरभाष 7976397837,
6378463043

अखबार –राजकुमार जैन राजन

हर सुबह ही मैं
देखता, पढ़ता हूँ
अखबार के पन्नों पर
लूटए हत्याएँ बलात्कार की खबरें
माबलीचिंग, राष्ट्रवाद
और सहिष्णुता पर
भड़काऊ बहसें
जिनको
सबसे ज्यादा जगह मिलती है

ढूंढ़नी पड़ती हैं
धर्मए संस्कृति, साहित्य की खबरें
जो विज्ञापन के नीचे
किसी कौने में दुबकी पड़ी रहती हैं
अर्थ लोलुप संस्कृति पर
आंसू बहाते हुए

समाज, देश का आईना होते थे
अखबार
जिनकी पदचाप से
खिलते रहे
आशाओं के कितने कमल
कितनी क्रांतियाँ जन्मी थीं
इनकी हुंकार से
जिनके शब्द-शब्द से
मिलती थी उम्मीद

अपनी आकांक्षाओं की झोली
पीठ पर सँभाले हुए
दो जून की रोटी की
लड़ाई के लिए
कृत संकल्प
आम आदमी का दर्द
अब नहीं मिलता अखबार में
बेरोजगारी, लाचारी,
अत्याचारों के खिलाफ
अब मुँह नहीं खुलते इनके
अपने अधिकारों के मिलने का स्वप्न
हर बार टूटता है
हेडलाईन खबरों की
मृगमरीचिका में

कुछ अपवाद को छोड़ दें
तो आज अखबार
समाज का दर्पण नहीं
मजबूरी है
अर्थ पाना उनके मालिकों का
पेशा है
और पेशा जिंदगी का
अहम हिस्सा होता है
वे शब्द अब नहीं छपते
जिनमे जीवन का दर्द
गुनगुनाता था
जिनसे पौरुष जग जाता था
यह अहसास
कितना छोटा है
आम आदमी
इनके सामने कितना बौना है

समय बदलेगा
थामकर मशाल
अखबार
अंधकार से गिरे देशएसमाज को
रोशनी देगा
फिर एकबार।

चित्रा प्रकाशन
आकोला . 312205 (चित्तौड़गढ़) राजस्थान
मोबाइल. 9828219919
मेल. rajkumarjainrajan@gmail.com

ऐसा गीत लिखना तुम

-रेखा चमोली

हृदय छू ले जो वही इक गीत लिखना तुम।
अमर हो जीवन, मधुर बस प्रीत लिखना तुम।।
हो व्यथित हृदय, दर्द भरा हो मन
बहती हो अश्रुधारा, ओंठो पर हो करुण क्रंदन
जी उठे हृदय धड़कन,
ऐसा स्नेह निमंत्रण लिखना तुम।
हृदय छू ले जो वही इक गीत लिखना तुम।
सुखों का हो वो सवेरा या दुखों भरी रात हो
निराशा भरा पतझड़ हो या आशाओं भरा बसंत
तलाश करे जो तुम्हें हम,
तुम सदा यूं ही मेरे पास मिलना
प्रेम की पाती, पिया के गीत लिखना तुम
अमर हो जीवन, मधुर बस प्रीत लिखना।
खो जाऊँ जो वक्त के संग मैं,
मैं नजर आऊँ कहीं ना
इक अधूरापन नजर आये तुम्हें हर ओर
छेड़ देना साज, मेरी जीत लिखना तुम।
मैं तो हूँ हर पल तुम्हारे पास,
इस सुखद एहसास का संगीत लिखना तुम।
हृदय छू ले जो वही इक गीत लिखना तुम।
अमर हो जीवन, मधुर बस प्रीत लिखना तुम....

श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखंड
9758225673

जीने की कोशिश तो कर

-पूनम तिवारी

उठ ! एक बार फिर जीने की कोशिश तो कर।
भाग्य को न कोस, कर्म पर यकीन तो कर।
समस्याओं को छोड़, समाधान को जोड़।
लक्ष्य को न छोड़, राह को तू मोड़।।

छोटी-छोटी कोशिशों से, हृदय में उत्साह भर।
मुश्किल चुनौतियों को, सहर्ष स्वीकार कर।
प्रभावित न हो जीवन, ऐसी साधना तो कर।
खिलेगा आस का कमल, कंटकों का सामना तो कर।।

विचलित हुए चंचल, चित्त को एकाग्र कर।
समस्या -समाधान से, मग को उजागर कर।
पावन-पवित्र भाव को, आचरण में तो भर।
उठ! एक बार फिर जीने की कोशिश तो कर।।

कर्णप्रयाग चमोली उत्तराखंड
91 74091 03302

पानी ही पानी है

-गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'

धरती से अम्बर तक, एक ही कहानी है।
छाई पयोधर पै, कैसी जवानी है।।

सूखे में पानी है, गीले में पानी है।
आँख खोल देखो तो, पानी ही पानी है।।
पानी ही पानी है, पानी ही पानी है।।

नदियों में नहरों में, सागर की लहरों में।
नालों पनालों में, झीलों में तालों में।।

डोबर में डबरों में, अखबारी खबरों में।
पोखर सरोबर में, खाली धरोहर में।।

खेतों में खड्डों में, गली बीच गड्ढों में।
अँजुरी में चुल्लू में, केरल में कुल्लू में।।

कहीं बाढ़ आई है, कहीं बाढ़ आनी है।
मढ़ी डूब जानी है, बड़ी परेशानी है।।

सोचो तो पानी है, घन की निशानी है।
जानी पहचानी है, यही जिन्दगानी है।।
पानी ही पानी है, पानी ही पानी है।।

हण्डों में भण्डों में, तीर्थ राज खण्डों में।।
कुओं और कुण्डों में, हाथी की शुण्डों में।
गगरी गिलासों में, लोटा पचासों में ।
छागल सुराही में, केटली कटाही में।।

तसला तगारी में, बगिया में क्यारी में।
बटुए तम्हाड़ी में, खाई में खाड़ी में।।

खारों कछारों में, बरखा बहारों में ।
भूखे को पानी है, प्यासे को पानी है।।

ऊपर भी पानी है, नीचे भी पानी है ।
दाएँ भी पानी है, बाएँ भी पानी है ।।
पानी ही पानी है, पानी ही पानी है।।

कूलों कुलावों में, नलों और नावों में।
जलवों दुआओं में, हिलती हवाओं में।।

नल में नगीने में, चूते पसीने में ।
खाने में पीने में, मरने में जीने में।।

कीचड़ में दल-दल में, मँडराते बादल में।
तनों और शाखों में, बिरहिन कीआँखों में।।

धरती से अम्बर तक, एक ही कहानी है।
छाई पयोधर पै, कैसी जवानी है।।

पानी से पानी है, पानी में पानी है।
पानी ही जीवन है, जीवन ही पानी है।।
पानी ही पानी है, पानी ही पानी है।।

'वृत्तायन' 957, स्कीम नं. 51
इन्दौर पिन- 452006 म.प्र.
Email prankavi@gmail-com
मो.9424044284/6265196070

पावस

रमेश चन्द्र

तमसाकर जब छा जाता है काले मेघों का आकाश।
मन का मयूर नाचने लगता लेकर दिल में कोई आस।

मंद-मंद चलती है पवन, मधुबन दिल में छा जाता है,
चकोर, पपीहा, दादुर का सहगान शून्य में बज जाता है।
तड़िता चट-चट जाया करती, नभ में शोर हुआ करता है,
वन-आवासित जीवों का पावस-त्योहार हुआ करता है।
उजले-उजले नभ में चंदा उजली हँसी हँसा करता है,
सप्तावर्ण से यह सूरज भी जग का आंगन रंग देता है।
रखकर आस बैठता चातक, मिट जाएगी मेरी प्याास।
मन का मयूर नाचने लगता लेकर दिल में को आस।

हृदय-प्रांत की यह धरा तब धन्य-धन्य हो जाया करती,
मन की वीणा प्रफुल्लित हो प्रेम-गीत है गाया करती।
अगणित गीत निकलकर फिर से ऐसा गान बना करता है,
मानो दे आदेश इन्द्र पावस का गान सुना करता है।
हृदय बह-बह जाया करता, कर-कर याद विरह का नाद,
मन निष्प्राशण, निनाद, तरंगित हो करता मेघों-सा नाद।
नए-नए उठते हैं अंकुर, लेकर नई पवन में सांस।
मन का मयूर नाचने लगता लेकर दिल में कोई आस।

आज देर से बना हुआ मेहमान मेरा है घन-परिवार।
बरबस झोली भर आई है और नहीं दिल का प्रस्तार।
मेरे आँगन में मंडराकर मेघ लुटाते संचित धन।
टप-टप आँसू डार आँख से, कहने लगे विरह के क्षण।
चहुँ ओर हरियाली छाई, नदिया ने ली फिर अंगड़ाई,
शीतल, सुरभित जलवायु भी बरबस करवाती कविता ।
गाँव में बैठी गोरी कहती, काश! पियाजी होते पास।
मन का मयूर नाचने लगता लेकर दिल में कोई आस।

तन्हाइयों से गले मिलकर

राजेश्वरी जोशी पंत

तन्हाइयों से गले मिलकर रो लेते हैं,
अपने ही गम से, लिपटकर सो लेते हैं

दर्द जब हद से बढ़ा, तो शराब हो गया,
दिल के प्याले में डालकर, रोज पी लेते हैं

हमको शिकायत नहीं, अब जमाने से,
दर्द बढ़ जाये तो, होठों को सी लेते हैं

अपनो ने हमेशा, पीठ में खंजर घोंपा,
चलो छोड़ो गैरों से, गले मिल जी लेते हैं

अब कोई उम्मीद, बची नहीं है बाकी
आरजूओं को दफना, के चलो जी लेते है.

चिंदी-चिंदी दर्द को कितना रफू किया
उधड़ गये फिर से दर्द को, चलो सी लेते हैं

थम सी रही है जिंदगी, चराग़ बुझ रहे हैं,
चलो अपना कफन ही हम सी लेते है

शक्तिफ़ार्म, तह.-सितारगंज
जि.-ऊ. सि. नगर, उत्तराखंड।

अक्षय ऊर्जा को अपनाना समय की मांग

–प्रत्यूष शर्मा

2004 में भारत सरकार ने तय किया था कि 20 अगस्त को अक्षय ऊर्जा दिवस के तौर पर मनाया जाएगा, ताकि अक्षय ऊर्जा या नवीकरणीय ऊर्जा के बारे में जागरुकता बढ़ाई जा सके।

पिछले 4-5 दशकों में विश्व की लगातार बढ़ती हुई जनसंख्या, नई-नई तकनीकों के विकास से और बिजली की बढ़ती मांग के कारण विश्व स्तर पर ऊर्जा की मांग भी काफी तेजी से बढ़ रही है। इस मांग को नवीकरणीय ऊर्जा के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। अब नवीकरणीय ऊर्जा ही भविष्य का इकलौता विकल्प रह गया है क्योंकि यही कार्बन-डाइऑक्साइड के उत्सर्जन को कम करके पर्यावरण की सुरक्षा में मददगार है।

पिछले कई वर्षों से हम जिन ऊर्जा स्रोतों को जीवाश्म ईंधन के रूप में उपयोग करते आ रहे हैं, वे एक सीमित संसाधन हैं। जहाँ एक तरफ उनको विकसित होने में लाखों साल लग जाते हैं, वहीं दूसरी तरफ ज्यादा दोहन के कारण समय के साथ-साथ वे कम होते जा रहे हैं। सौर ऊर्जा को बिजली में बदलकर उपयोग में लाया जा सकता है। इस ऊर्जा को प्रयोग में लाने के लिये सोलर पैनलों की जरूरत होती है। हमारे देश की धरती पर पाँच हज़ार लाख किलोवाट घंटा प्रति वर्गमीटर के बराबर सौर ऊर्जा आती है। साफ धूप वाले दिनों में सौर ऊर्जा का औसत पाँच किलोवाट घंटा प्रति वर्गमीटर होता है। एक मेगावाट सौर ऊर्जा के उत्पादन के लिये लगभग तीन हेक्टेयर समतल भूमि की आवश्यकता होती है। हमारा देश एक उष्ण-कटिबंधीय देश है। उष्ण-कटिबंधीय देश होने के कारण हमारे यहाँ वर्ष भर में सूर्य का प्रकाश लगभग 3000 घंटे तक मिलता है। भारत सरकार ने 2030 के अंत तक 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसमें पवन ऊर्जा से 140 गीगावाट, सौर ऊर्जा से 280 गीगावाट, बायोमास ऊर्जा और लघु जलविद्युत परियोजनाओं से 80 गीगावाट शामिल है। सौर ऊर्जा उत्पादन में सबसे ज्यादा योगदान रूफटॉप सौर उर्जा और सोलर पार्क का है। यह देश में बिजली उत्पादन की स्थापित क्षमता का 16 प्रतिशत है। सरकार का लक्ष्य इसे बढ़ाकर स्थापित क्षमता का 60 प्रतिशत करना है। एक अनुमान के अनुसार, वर्ष 2035 तक देश में सौर ऊर्जा की मांग सात गुना तक बढ़ने की संभावना है। हमारे देश में यदि सौर ऊर्जा का इस्तेमाल बढ़ाया जा सके तो इससे जीडीपी दर भी बढ़ेगी।

नवीकरणीय ऊर्जा विकल्प प्रचुर मात्रा में सरलता से उपलब्ध हैं। इन पर जीवाश्मीय ईंधनों की तरह किसी भी देश का एकाधिकार नहीं होता। इस कारण इनकी आपूर्ति आसानी से की जा सकती है।

इस तरह हम यह कह सकते हैं कि नवीकरणीय ऊर्जा विकल्प सर्वव्यापी और पूरी दुनिया में आसानी से उपलब्ध है।

धरती को स्वच्छ रखने की ज़िम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए हमारे देश ने संकल्प लिया है कि वर्ष 2030 तक बिजली उत्पादन की हमारी 40 फीसदी स्थापित क्षमता ऊर्जा के स्वच्छ स्रोतों पर आधारित होगी। इस महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल करने के साथ ही हमारा देश विश्व के सबसे बड़े स्वच्छ ऊर्जा

उत्पादकों में शामिल हो जाएगा। राष्ट्रीय पवन-सौर स्वच्छता नीति-2018 के अनुसार, पवन-सौर ऊर्जा उत्पादन के वर्तमान लक्ष्य 80 गीगावाट को वर्ष 2022 तक दोगुने से भी ज्यादा अर्थात 225 गीगावाट तक पहुँचाने का लक्ष्य है । नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में क चुनोतियाँ भी हैं। लोगों में नवीकरणीय ऊर्जा को लेकर जागरूकता का अभाव है, जिससे उपलब्ध क्षमता के बावजूद भी नवीकरणीय ऊर्जा का दोहन काफी कम है और इसके साथ ही कुशल मानव संसाधनों का भी अभाव है।

सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने में सरकार की पहल सराहनीय है। इसको बढ़ावा देने के लिए कई नए नए कार्यक्रम शुरू किए गए हैं जैसे राष्ट्रीय सौर ऊर्जा मिशन जिसका लक्ष्य अनुसंधान एवं विकास और कच्चे माल तथा उत्पादों के घरेलू उत्पादन के माध्यम से देश में सौर ऊर्जा उपयोग की लागत को कम करना है।

एक अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन भी किया गया है। यह गठबंधन सौर ऊर्जा संपन्न देशों का एक संधि आधारित अंतर-सरकारी संगठन है। इसकी स्थापना की पहल भारत ने की थी और पेरिस में 30 नवंबर, 2015 को संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन के दौरान भारत और फ्राँस ने इसकी संयुक्त शुरुआत की थी।

कर्क और मकर रेखा के बीच आंशिक या पूर्ण रूप से बसे हुए 122 सौर संसाधन संपन्न देशों के इस गठबंधन का मुख्यालय गुरुग्राम, हरियाणा में है। इस फ्रेमवर्क में वर्ष 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा और उन्नत व स्वच्छ जैव-ईंधन प्रौद्योगिकी के लिये शोध में निवेश को बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है।

सरकार द्वारा ग्रिड से जुड़े हुए रूफटॉप और छोटे सौर ऊर्जा संयंत्र कार्यक्रमों का भी क्रियान्वयन किया जा रहा है, जिनके तहत अलग-अलग क्षेत्रों में 2100 मेगावाट की क्षमता स्थापित की जा रही है। इस कार्यक्रम में सामान्य श्रेणी वाले राज्यों में लागत के 30 प्रतिशत तक और विशेष श्रेणी वाले राज्यों में लागत के 70 प्रतिशत तक केंद्रीय सरकार द्वारा वित्त सहायता मुहैया कराई जा रही है।

स्मार्ट सिटी बनाने में भी 10 प्रतिशत नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को कहा गया है ।

भारत की ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा करने के लिये बुनियादी ढाँचा मज़बूत करने की ज़रूरत है और इसके साथ ही ऊर्जा के नए स्रोत तलाशना भी ज़रूरी है। सौर ऊर्जा क्षेत्र देश की ऊर्जा मांग को पूरा करने में सहायक साबित हो सकता है।

सौर ऊर्जा के साथ-साथ समुद्र तटीय क्षेत्रों में पवन और जल ऊर्जा से बिजली पैदा करके विश्व की बिजली की ज़रूरत को पूरा किया जा सकता है। नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करने से वायु प्रदूषण को भी कम किया जा सकता है।

द्वारा विधि चंद शर्मा,
गाँव - पलासन, डाकघर- नाल्टी,
तहसील और जिला- हमीरपुर,
हिमाचल प्रदेश। पिन-177001
मेल- ankupratyush5@gmail-com
फोन- 7018829557

व्यंग्य -

बच्चे की प्रथम शिक्षक और पाठशाला उसकी आया होती है

हेमंत चौकियाल

मैं हर भाषण तथा निबन्ध लेखन में प्रथम आता था, कारण मेरी यह टैग लाइन थी, ''माँ बच्चे की प्रथम शिक्षक होती है।'' भाषण या निबन्ध का शीर्षक कुछ भी क्यों न हो लेकिन इतना हुनर न जाने कहाँ से सीख गया था कि मैं उस निबन्ध या भाषण में यह जरूर सार्थक व सटीक रूप से जोड़ ही लेता था कि माँ बच्चे की प्रथम शिक्षक होती है। बस इसी जुमले के कारण न जाने मेरे घर में कितनी ट्रॉफी, कप और शील्ड जमा हुई।

आज जब मेरे बेटे ने टीचर के लिखे निबन्ध पर बातचीत की तो अनायास अपने 40 वर्ष पीछे पहुँच गया। वो हर पल जैसे सजीव होकर मानस पटल पर तैरने लगा। क्या जोश होता था तब पढ़ाई का। पिताजी महीनों बाद लम्बी सरकारी छुट्टी पर ही घर आते। माँ उस दिन विशेष स्वादिष्ट खाना बनाती। पिताजी के आने के दिन तो जैसे दूध मिश्रित सूजी (जो गेहूँ के आटे से बनता और सामान्य बोलचाल में हम प्रसाद कहते) जरूर घर में बनतीं। उसमें सफेद और पीलापन लिए दानेदार घी। आहा... खाने का अलग ही आनंद आता।

बचपन बीता, जवानी आई तो नौकरी की फिकर ने शहरों का रुख करवाया। नौकरी लगी तो घरवालों ने शादी भी कर दी। शादी हुई तो बीबी ने भी साथ चलने की जिद की। फस्ट क्लास की साइंस बैचलर जो थी। कई बार समझाया था कि अब गाँव भी शहर जैसा ही हो गया है, सब सुविधाएँ भी आ गई हैं। पढ़ाई लिखाई की भी दिक्कत नहीं रह गई। गाँव से ही हर अच्छे स्कूल के लिए बसें लगी हैं। कान्वेंट, नवोदय या केन्द्रीय विद्यालय, हर विद्यालय के लिए बसें हैं। लेकिन श्रीमती को तो शहर ही जाना था तो सो पहुँच गईं।

महानगर के खर्चों ने जल्दी बता दिया कि आमदनी कम है तो दोनों को नौकरी ढूंढनी ही थी। अब बच्चों के लिए को सस्ती आया भी ढूंढ ली गई।

राजू सातवीं और रानी दूसरी कक्षा में पहुँच गई थी, लेकिन कभी हम दोनों को इतना समय नहीं मिला कि बच्चों के साथ कापी किताब खोल कर बैठें। लेकिन आज राजू ने अनायास ही पूछ लिया था कि - ''पापा! सर ने माँ पर निबन्ध लिखने के लिए दिया है। पापा मैंने इतने तक तो लिख लिया है कि माँ बच्चे की प्रथम पाठशाला और शिक्षक होती है, अब आगे क्या लिखूँ?

यह सुनते ही मुझे अपनी आँखें गीली महसूस हुईं। राजू के हाथ वह कापी लेकर, उस लाइन को काटकर मैंने लिख दिया -

''अब बच्चे की प्रथम पाठशाला और शिक्षक उसकी आया होती है।" कापी राजू की ओर सरका कर कहा - ''बेटे अब कुछ भी लिख ले, नम्बर लाने वाली बात तो मैंने लिख ही दी है।''

अगस्त्यमुनि - रुद्रप्रयाग

विकसित देशों को पीछे छोड़ चांद के ध्रुव पर पहुँचा विश्वगुरु भारत

-डॉ. उमेश प्रताप वत्स

चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर चंद्रयान-3 के माध्यम से इसरो द्वारा विक्रम लेंडर सफलतापूर्वक उतारना भारत के लिए वैज्ञानिक दुनिया में बहुत ही महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होने वाला है। जब चंद्रयान-3 ने चाँद पर सफलता पूर्वक अपना कदम रखा तो विश्व के वैज्ञानिक इसे हतप्रभ हो देख रहे थे। वर्षों से इस मून मिशन पर लगे कई वैज्ञानिक हजारों आशंकाओं के प्रश्न रूपी भंवर में उलझे हुए थे। देश में जगह-जगह लोगों ने चंद्रयान-3 की सफलता के लिए यज्ञ-हवन प्रारंभ कर दिये थे किंतु विक्रम लेंडर के सफलता पूर्वक चाँद की सरजमीं पर कदम रखते ही सारी आशंकाएँ स्वयं ही समाप्त हो गईं। 615 करोड़ की लागत से तैयार हुआ यह मिशन करीब 42 दिन की यात्रा के बाद चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास लैंडिंग करने में सफल हुआ। चंद्रयान-3 की लैंडिंग की ज़िम्मेदारी महिला वैज्ञानिक रितु करिधाल को सौंपी गई थी जिसने अपनी टीम के सहयोग से भलीभाँति निभाई। ध्यान रहे जब चंद्रयान 2 को सफलता नहीं मिली थी तो पीएम ने अपने संबोधन में कहा था कि इस असफलता ने हमारे संकल्पों को और मजबूत बना दिया है। उन्होंने कहा था कि आज भले ही हम चंद्रमा की सतह पर अपनी योजना से नहीं जा पाए, लेकिन इस बार हमारी सफलता का मूल मंत्र इसी चंद्रयान-2 के गर्भ में छिपा हुआ था।

हमारा अगला प्रयास अन्य ग्रहों का अध्ययन करना होगा और उसके आगे के सारे प्रयास हमारे प्रतिभावान वैज्ञानिकों के बलबूते सफल होंगे।

प्रधानमंत्री के उत्साहवर्धन से ही आज चंद्रयान-3 की सफलता एक नया इतिहास गढ़ चुकी है ।

वरिष्ठ महिला वैज्ञानिक रितु करिधाल ने चंद्रयान 3 के मिशन निदेशक के रूप में अपनी भूमिका बखूबी निभाई। निसंदेह! भारत से पहले रूस, अमेरिका व चीन भी चाँद पर अपने यान भेज चुके हैं किंतु चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर आज तक कोई भी देश अपना यान नहीं भेज सका क्योंकि यहाँ कई बार तापमान माइनस 249 डिग्री तक हो जाता है। यहाँ पहुँचने के मिशन अधिकतर असफल होने की संभावना रहती है। चंद्रयान-3 भारत का तीसरा मून मिशन है जो भारत की अंतरिक्ष यात्रा के अगले अध्याय को शुरू करने जा रहा है। इस मिशन की सफलता ने हमें चाँद के बारे में गहनता से विस्तृत जानकारी देनी प्रारंभ कर दी है।

जीवन के लिए आवश्यक तत्व क्या हो सकते हैं, इसकी पड़ताल करने के लिए ही इसरो ने विक्रम लैंडर चाँद पर उतारने की योजना बनाई थी। भारत का चंद्रयान-3 इसरो के वैज्ञानिकों के कठोर परिश्रम व करोड़ों लोगों की शुभकामनाओं के चलते सफलतापूर्वक उतरकर विज्ञान के क्षेत्र में पूरी दुनिया में भारत की धाक जमा चुका है।

14 जुलाई को दोपहर 2:35 बजे श्रीहरिकोटा से उड़ान भरने वाले चंद्रयान-3 ने अपनी 40 दिनों की लंबी यात्रा सफलतापूर्वक पूर्ण की है। इसरो के बताए गए विवरण के अनुसार चंद्रयान-3 के लिए मुख्य रूप से तीन उद्देश्य निर्धारित किये गये थे। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर लैंडर की सॉफ्ट लैंडिंग कराना, चंद्रमा की सतह कही जाने वाली रेजोलिथ

पर लैंडर को उतारना और घुमाना। लैंडर और रोवर्स से चंद्रमा की सतह पर शोध कराना। पहले दोनों उद्देश्य भलीभाँति पूर्ण हो गए हैं और तीसरे उद्देश्य पर रोवर प्रज्ञान कार्य कर रहा है।

लैंडर 'विक्रम' अब अपने मस्तिष्क का प्रयोग करते हुए अपने सेंसर्स की मदद से सफलतापूर्वक लैंड कर इसरो के सपनों को पंख लगा दिये हैं, अब देखना यह है कि चंद्रमा की सतह का अध्ययन कर रोवर प्रज्ञान किन रहस्यों को विश्व के समक्ष उजागर करने में सफलता प्राप्त करता है ।

प्रज्ञान वहाँ की मिट्टी और पहाड़ों का विश्लेषण भी करेगा। वैज्ञानिकों के साथ-साथ विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए भी यह रहस्यमयी आकर्षक जानकारियाँ जुटायेगा जो कि बहुत बड़ा ज्ञानवर्धक रोमांचक क्षण होगा। 140 करोड़ लोगों की शुभकामनाओं व प्रभु के आशीर्वाद से सबकुछ ठीक-ठाक रहा।

इसरो चीफ एस. सोमनाथ ने कहा कि ''प्रज्ञान रोवर के साथ इसमें से कई यंत्र भी निकलेंगे जिनमें रम्भा शामिल है। रम्भा चंद्रमा के वातावरण का अध्ययन करेगा।

यह रोवर दो अहम अध्ययन करेगा जिनमें सबसे पहले लेज़र से चाँद की जमीन का अध्ययन करना शामिल है। इसके साथ ही उसके रसायन को भी जानने की कोशिश की जाएगी।"

इसरो चीफ ने बताया कि इस अभियान की सबसे मुश्किल घड़ी उपग्रह को अंतरिक्ष में ले जाकर छोड़ना था और फिर दूसरी मुश्किल घड़ी इसको चंद्रमा पर लैंड कराना था। जो कि सबके सहयोग से सफल हो सका। इसके साथ ही उन्होंने अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा समेत ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन के ग्राउंड स्टेशंस को भी शुक्रिया अदा किया। भारत में रक्षाबंधन भी आने वाला है। रचनाकारों व कवियों ने अभी से ही रक्षाबंधन त्यौहार के लिए धरती रूपी बहन व चंद्रमा रूपी भाई पर कलम का कमाल दिखाना प्रारंभ कर दिया है। रचनाकारों के अनुसार पहले धरती माँ का यह प्यारा प्रतिभाशाली बालक रोवर प्रज्ञान चंदा मामा के घर अवश्य जायेगा और काफी दिन मामा के पास रहकर अपनी सभी उत्सुकता का समाधान प्राप्त करेगा।

इसी को प्रदर्शित करती वत्स की कलम से -

आया तो पहले भी मामा, था मैं तेरे द्वार
दोनों बार दिखाया तूने, गुस्सा अपरम्पार
पर माँ बोली लगे है मामा, बुरा नहीं मानते
लगता है वह तेरा सच्चा, प्यार नहीं जानते
रिश्तों में तो चलता ही है, रूठना और मनाना
दिल पर लगा नहीं छोड़ते, मामा के घर जाना
धरती माँ की सीख मुझे, प्रोत्साहित कर जाती
रूठे मामा की फिर से, मुझको याद सताती
मैं माता की राखी लेकर, मामा के घर जाऊँ
यही सोच-सोचकर दिनभर, खुशी से मैं इतराऊँ
साजो-सामान बाँध चढ़ा मैं, चंद्रयान के वक्ष पर
चालीस दिन सफर किया, तब पहुँचा वह लक्ष्य पर
मामा ने भी छोड़ा गुस्सा, मुझको गले लगाया
बोला विक्रम तेरा धैर्य, मुझको बड़ा ही भाया
ले ले जो लेना है तुझको, खुला है मेरा द्वार
तेरे प्यार के आगे मेरा, तुच्छ दौलत-भंडार अब
जब भी आना हो तुमको, निसंकोच चले आना
राखी का यह अमूल्य प्रेम तुम, बहना का फिर लाना
मिलन ऐतिहासिक मामा-भांजे का, सब जग देख रहा
सदियों से ही मेरे भारत का, इरादा नेक रहा है

- स्तंभकार
umeshpvats@gmail-com
14 शिवदयाल पुरी, निकट आइटीआई
यमुनानगर, हरियाणा - 135001
9416966424

आज के परिवेश में अध्यापक की भूमिका

-डॉ. गोपाल प्रसाद पाठक 'राज'

अध्यापक को सत्य सनातन भारतीय संस्कृति में भगवान से भी ऊँचा दर्जा प्रदान किया गया है। अध्यापक मार्गदर्शक होता है। अध्यापक आचार्य होता है, अध्यापक शिक्षक होता है तथा अध्यापक अपने शिष्य को उचित रास्ता दिखाने वाला होता है। अध्यापक के पवित्र आचरण, अध्यापक के उच्च चरित्र तथा अध्यापक की उच्च ज्ञानात्मक बुद्धि के कारण अध्यापक को समाज में सबसे उच्च स्थान प्रदान किया गया है। पुराने जमाने में अध्यापक को ब्रह्मा, विष्णु और महेश से भी ऊँची संज्ञा दी गई है। इसका प्रमुख कारण गुरू का उच्च ज्ञान, पूर्ण समर्पण और कठोर तपस्या थी। एक समय समाज में अध्यापक को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। वह जमाना था, जब सम्पूर्ण दुनिया ने भारत को ज्ञान के क्षेत्र में विश्व गुरू स्वीकार किया था। समय के साथ-साथ हालात में परिवर्तन होता गया। अब अध्यापक मात्र एक वेतन भोगी कर्मचारी बनकर रह गया है, जो अपनी रोजी रोटी चलाने के लिए 6 से 7 घंटे तक का वक्त भी पूर्ण लगन की भावना से नहीं दे पा रहा है। आधुनिक परिवेश का अध्यापक अपनी मान मर्यादा को पूर्ण रूप से त्याग चुका है। आज उसमें धैर्य, आत्मज्ञान और आत्म विश्वास की कमी साफ दिखाई पड़ती है। आज न उसके पास निगाह की पवित्रता है, न उसके पास कोई उच्च आदर्श हैं और न ही उसके जीवन का कोई भी दृष्टिकोण तथा न ही उसमें चरित्र की शुद्धता है। आज के अध्यापक का प्रमुख ध्येय सिर्फ पैसा कमाना रह गया है। प्राचीन समय में विद्या दान से सर्वश्रे ठ दान कोई दूसरा नहीं था। आज के आधुनिक परिवेश में विद्या दान कोई दान न रहकर विद्या को खरीदना, प्रमाण पत्र खरीदना तथा अध्यापक को खरीदना हो गया है। आज जब समस्त चीजें क्रय और विक्रय की जा रही हैं तो फिर अध्यापक भी पीछे क्यों रहे? आज का अध्यापक खुद बिक रहा है और अपने ज्ञान का सौदा कर रहा है। अब आप ही विचार कीजिए कि बिका हुआ सौदा समाज को क्या तो ज्ञान देगा और क्या दिशा देगा। आज जमाने में अध्यापक के अनैतिक स्वरूप को देखने वाले तमाम हैं। उसके व्यवहार की बुराई करने वाले भी असंख्य हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षक को सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था की धुरी माना गया है। उसमें अध्यापक के औचित्य को वर्णन करते हुये कहा गया है कि किसी भी समाज में शिक्षक की उपलब्धि उसकी सांस्कृतिक एवं सामाजिक भूमिका को इंगित करती है। कहा जाता है कि कोई भी देश अपने शिक्षकों के स्तर से ऊँचा दर्जा प्राप्त नहीं कर सकता। आज हम 21वीं सदी में जी रहे हैं हांलाकि ग्लोबलाईजेशन की अंधी दौड़ में हमारी शिक्षा, संस्कृति, भाषा एवं धर्म की पहचान को चोट पहुँच रही है। उनमें बदलाव की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। आज शिक्षा में प्राचीन मूल्य का क्षरण हो रहा है और उसके स्थान पर नवीन मूल्यों का उदय हो रहा है। आज अध्यापकों का एक तबका इतना दूषित हो चुका है कि आज जमाने में अध्यापकों को रिश्वत का प्रलोभन देकर ज्यादा से ज्यादा अंक अर्जित कर लिये जाते हैं।

आज आरक्षण की अंधी दौड़ के कारण आरक्षित श्रेणी के अयोग्य अध्यापक भी सुयोग्य अध्यापकों में शामिल कर लिये जाते हैं। आज वक्त का तकाजा यह कह रहा है कि अध्यापक को अपना रवैया परिवर्तित करना होगा। विधार्थियों को जिन्दगी में उचित गुणवत्ता प्रदान करनी होगी। आज विधार्थियों को भी अनुचित साधनों का त्याग करते हुये मेहनत एवं परिश्रम से सफलता प्राप्त करनी होगी। अध्यापकों का यह पुनीत कर्त्तव्य बनता है कि वे दूषित होती शिक्षा प्रणाली को पारदर्शी एवं निष्पक्ष बनाएँ। इसके लिए अध्यापकों को सत्य एवं ईमानदारी के रास्ते पर अडिग रहना होगा। साथ ही उनको सरल, साधारण एवं संयमित जीवनशैली को अपने अन्दर समाहित करना होगा। वर्तमान समय में अध्यापक को नैतिक होने के साथ-साथ अपना वैचारिक विकास करना होगा। वैचारिक विकास के अन्तर्गत अध्यापक को सहनशीलता, विनम्रता, वैचारिक वैज्ञानिकता, स्वतंत्र चिन्तन, व्यवहारिक पवित्रता, निष्पक्षता तथा नैतिकता की कसौटी पर खुद का आंकलन करना होगा। हमारे अध्यापक ऐसा आचरण प्रस्तुत करें जिससे उनके ऊपर कोई भी उंगली न उठा सके। जैसा अध्यापक होगा ठीक वैसे ही विधार्थी बनेंगे और फिर ये ही आने वाले भविष्य के सूत्रधार बनेंगे। आज के गुरू (अध्यापकों) को अपने रोल को पहचानना होगा। महान शिक्षाविद् एवं दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जीवनभर एक श्रे ठ और एक आदर्श शिक्षक रहे इसीलिए आज उनके ही जन्म दिवस को यादगार बनाने के लिए प्रत्येक वर्ष शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षकों एवं अध्यापकों को सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया जाता है। हम समस्त अध्यापकों का यह पुनीत कर्त्तव्य बनता है कि हम उस अभूतपूर्व आदर के सुयोग्य दर्जे के रूप में स्वयं को समाज में स्थापित कर सकें। क्योंकि सुन्दर होते हैं व्यक्ति के कर्म, उसके विचार, उसकी वाणी, उसका व्यवहार, उसके संस्कार और उसका चरित्र जिसके जीवन में यह सब कुछ हैं वही मनुष्य इस दुनिया का सबसे सुन्दर इंसान है। अन्त में समस्त गुरूजनों को मेरी ओर से शिक्षक दिवस की हार्दिक बधाईयाँ, शुभकामनाएँ एवं मंगल कामनाएँ।

(शिक्षाविद् एवं साहित्यकार)
मो.नं. 07217466043
gopalpathak473@gmail.com

पाण्डव गुफा का जंगल

-डॉ. राकेश 'चक्र'

दैनिक क्रियाओं से निवृत होकर मैंने गंगोत्री धाम कस्बे से प्रातः पाण्डव गुफा की ओर दर्शनार्थ प्रस्थान किया। ऐसी मान्यता है कि यह एक प्राचीनकाल की गुफ़ा है। महाभारत काल में पाण्डवों ने कैलाश पर्वत की यात्रा के समय इस स्थान पर ध्यान आदि किया था। होटल मनीषा के उस पार था गौरीकुण्ड, सूर्य कुण्ड और पाण्डव गुफा। कल यानी दस अक्टूबर को मैं मुख्य धाम के दर्शन कर चुका था। मैंने भागीरथी पर बना लोहे का पुल पार किया। कल-कल निनाद माँ भागीरथी का चल रहा था। विशाल चट्टानों के बीच पचासियों मीटर नीचे। पुल के पार भी कुछ होटल थे और कुछ सरकारी विभाग के भवन। थोड़ी देर टाइल्स की पगडण्डी पर चलने के बाद पहाड़ी पगडण्डी आ गई और आगे बढ़ा तो देखा कुछ जलधाराएँ भागीरथी नदी में मिलने आ रही थीं। उन पर भी एक लोहे का पुल बना था। उसे भी पार किया। चारों ओर पहाड़ पर खड़े मौन वृक्ष मेरा स्वागत कर रहे थे। कुछ पक्षियों का गीत संगीत वातावरण में रस घोल रहा था। लेकिन वैसा नहीं जैसा मैं सोचता था, अर्थात यहाँ भी पक्षी नदारद। पाण्डव गुफा करीब दो किलोमीटर जंगल के बीच थी। मैं अकेला ही पहाड़ी पगडण्डियों पर कभी चढ़ाव और कभी उतार का आनंद लेता बढ़ता रहा। वातावरण पूरी तरह शान्त और आनंददायक था, विशेषतः देवदार वृक्षों से आच्छादित वन। चारों ओर देवदार, चीड़ और कुछ भोजपत्र के वृक्ष भी, जंगली छोटे पौधे जिनके फूल सूख गए थे, शायद एकाध महीने पहले सब खिल रहे हों। कुछ छोटे-छोटे कीटों का संगीत बह रहा था पवन में। जंगल के बीच पेड़ों के आस-पास विशाल चट्टानें मौन खड़ी थीं। जिन्हें देखकर आश्चर्यचकित हुआ, लेकिन मुझे लगा कि ये सब पहाड़ खिसकने से आती रही होंगी। कोई बलशाली या ताकतवर ऐसा कैसे करीने से रख सकता है इन्हें। या शायद महाभारत काल में बलशाली भीमसेन ने रखी हों। देवदार और चीड़ आदि के सूखे फल और पत्तियाँ मखमल की तरह धरा पर बिछौना बिछाकर मार्ग को कोमल कर रहे थे। दोनों ओर जंगल में ठीक बीच में भागीरथी साथ-साथ बह रही थी, अर्थात नदी के इस पार भी जंगल और उस पार भी। भागीरथी नदी का नाद कहीं कम तो कहीं ज्यादा था, दक्षिण दिशा की ओर बहती हुई, गीत-संगीत सुनाती चली जा रही थीं, अपनी मंजिल की ओर। गहराई भी चट्टानों के बीच चालीस मीटर, तो कहीं और अधिक। अनुपम अलौकिक दृश्य पूरे मार्ग में मुझे अब तक कोई नहीं मिला, अर्थात न ही कोई मनुष्य, न कोई जंगली जानवर। पाण्डव गुफा जाने के लिए मार्ग में कोई सरकारी चिन्ह आदि इंगित नहीं थे, दो-तीन बार भ्रम भी हुआ, क्योंकि बीच में कई रास्ते थे, जो शायद कुछ गाँवों की ओर जा रहे थे। वापसी में ट्रैकर से पता चला कि यहीं से केदारनाथ को भी रास्ता जाता है। जिसे सतरह से अट्ठारह दिन में पूरा किया जाता है। जिसमें दो दिन बर्फ ही बर्फ के मार्ग के बीच से गुजरना पड़ता है तथा दो रातें टैंट लगाकर बर्फ में बितानी पड़ती हैं। तीन सैलानी जाने के लिए अर्थात् केदारनाथ धाम जाने वाले और उनके साथ एक ट्रैकर तथा साथ में आठ-दस मजदूर सामान ढोने वाले जा पाते हैं एक हजार

रुपये मजदूरी।

आज सूर्यदेव सिन्दूरी आभा बिखेरते हुए, उनके चारों ओर बड़े-बड़े हिम शिखर मुझे लुभा रहे थे कि सृष्टि कितनी अनुपम और अलौकिक है। मैं रास्ता भटका नहीं, ईश्वर मुझे रास्ता बताते रहे और मैं आधा घण्टे में पहुँच गया था गुफा के नजदीक। किसी जिज्ञासु ने ही चलते-चलते काले-सफेद पेंट से पत्थरों पर लिख दिया था पाण्डव गुफा। मैं जिज्ञासा लिए उसके करीब पहुँच गया था। मैं देखता हूँ कि उसके आस-पास कुछ सूखी झाड़ियाँ और अन्य सामान वेतरतीब रखा था, जो अहसास करा रहा था कि इसमें अवश्य कोई मनुष्य रहता है। पूर्व की ओर गुफा में जाने के लिए छोटा-सा दरवाजा लगा था। जो इस समय खुला था। कुछ झुककर पार किया, तो देखा कि गुफा तो अद्‌भुत है, लेकिन चारों ओर रखे सामान से अस्त-व्यस्त-सी लग रही है। एक वैरागी साधु एक ओर विराजमान हैं, जो अभी कम्बल में सिकुड़े पड़े हुए थे। मैंने उन्हें प्रणाम किया, तो वे चौंककर आँखें मलते मेरी ओर निहारने लगे। बाहर खूब ठण्ड थी और गुफा में थोड़ा कम। मेरा बाबाजी ने पूरा परिचय पूछा। मैंने बताया। चेहरे पर मुरादाबाद का नाम सुनकर मुस्कान आ गई थी उनके, क्योंकि वह इसी जनपद के पूर्व निवासी हैं। उनकी धूनी बुझी पड़ी हुई थी। बाबाजी ने उसे चिमटे से उघाड़ा, तब उसमें कोयले सुलगते दिखे। बाबाजी ने उसमें सूखी लकड़ियाँ रखीं, मैंने भी रखने में मदद की। फूँकनी से फूँक मारकर उसे जलाया, तो छोटी-छोटी लकड़ियों में आग सुलगने लगी, अर्थात वह जलने लगीं। बातों का सिलसिला चल पड़ा। मेरे पास कुछ सेब और अखरोट थैले में थे, वह बाबाजी को मैंने नगद दक्षिणा सहित भेंट किये। उनके चेहरे पर मुस्कान और जिज्ञासा बढ़ने लगी। मैंने अपने बारे में पूछने पर सब कुछ बताया। लंगोटी बाँधे हुए थे, सफेद वस्त्र और ऊपर से स्वेटर आदि था। आत्मीयता बढ़ती गई। मैंने भी बाबाजी का नाम ग्राम और उनके जीवन के बारे में पूछा तो उन्होंने कुछ इस तरह बताये-

''मेरा पूर्व का नाम रामकिशोर शर्मा है। चौबीस वर्ष की उम्र में मैंने घर-बार त्यागा है। अब मेरा नाम सीताराम है। मैं अठारह वर्ष हरिद्वार में भी रहा। मूलतः ठाकुरद्वारा, मुरादाबाद का रहने वाला हूँ। कई दिन में गंगोत्री के बाजार जाता हूँ, वहीं से कई दिन का सामान खाने-पीने का ले आता हूँ। पाउडर का दूध, चीनी और चायपत्ती की ज्यादा जरूरत पड़ती है। वन विभाग के लोग बहुत तंग करते हैं। राम की कृपा है, जो यहाँ टिके हैं। कुछ आप जैसे यात्री आते हैं, जो सहायता कर जाते हैं। हरिद्वार में रहते चार वर्ष मौन धारण किया। पाण्डव गुफा में तेरह वर्ष हो गए रहते हुए। पहले इस गुफा में एक बैरागी और साधु साथ-साथ रहते थे। अर्थात् बैरागी का मतलब विष्णु मत जो किसी प्रकार का व्यसन नहीं करते, अघोरी साधु का मतलब गेरूआ वस्त्र पहनने वाला, जो व्यसन भी करता है- जैसे नशा पत्ता, माँस मदिरा, श्मशान पूजा आदि। बाद में दोनों में काफी विवाद हुआ। दोनों ही यहाँ से चले गए। साधु ही साधु का दुश्मन बन जाता है। पहले मैं भी नशा-पत्ता करता था, लेकिन जब से वैष्णव बैरागी हुआ हूँ, तब से बस बीड़ी पीने की लत लगी है। चाय और कॉफी भी कई बार पीता हूँ। अब मैं रामानंद अखाड़ा से जुड़ा हूँ। अब की बार कुम्भ में भी गया था इलाहाबाद। मैं गंगोत्री में किसी मठ में भण्डारा आदि के कार्यक्रम में शामिल नहीं होता हूँ। अपना बनाता हूँ और खाता हूँ, बस मूंग की दाल और रोटी।''

बाबाजी अभी शौच को नहीं गए थे, उन्होंने आग पर पानी गर्म किया और दो गिलास गर्म पानी पीकर निवृत होने चले गए, शौच को वन विभाग के शौचालय में। मुझसे उन्होंने कहा यहीं बैठो।

गुफा में एक तरफ एक हीटर भी जल रहा था, गुफा में दो बल्ब जल कर गुफा को प्रकाश से भर रहे थे। गुफा काफी बड़ी थी, पूरी विशाल चट्टान जिसके एक ओर बहुत छोटा दरवाजा तथा दूसरी ओर कुछ बड़ा। जो बाबाजी ने ही अपनी सुरक्षा और ठण्ड से बचने के लिए लगवाया है। छोटे दरवाजे से बहुत ही झुककर जाया जा सकता है, वरना तो सिर में चोट लगने का पूरा खतरा है। बल्कि पूरी गुफा में ही थोड़े से स्थल में ही ठीक से खड़ा हुआ जा सकता है। वरना तो सारी गुफा में झुककर ही चला जा सकता है। बाबाजी जहाँ अपनी जरूरत का सामान या धूनी रमाए रहते हैं और आराम करते हैं, वह भी काफी नीचा है, अर्थात् कमर झुकाकर काम किया जा सकता है, वरना चोट लगने का खतरा। कहने का तात्पर्य है कि आम आदमी ऐसी स्थिति में नहीं रह सकता। बाबाजी दैनिक कार्यों से निवृत होकर आ गए थे। अपने स्थान पर बैठ गए, बोले, ''श्रद्धालु! सन्यासी का जीवन बहुत कष्टमय होता है। पूष, माघ में यहाँ चारों ओर बर्फ ही बर्फ पड़ती है। जब बर्फ पड़ती है, तब इस जंगल में माँसाहारी भालू आ जाते हैं। उस समय तेंदुआ और भेड़-बकरियाँ भी आ जाती हैं। भाई मैं तो दुखों से कहता हूँ कि तुम खूब आओ। हमें दुख प्यारे लगते हैं। इस गुफा में दो सौ वर्ष पूर्व एक साधु रहता था, जो दैविक शक्ति रखता था। बाबाजी का कहना है कि मैं तो सभी पुरखों को दावत देता हूँ कि आओ और आओ। खूब आओ। मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। मैं किसी से कुछ माँगता नहीं हूँ। कोई न कोई श्रद्धालु कुछ दे ही जाता है, तभी खर्चा चलता रहता है। ऐसा कहते हैं कि इस गुफा में पाण्डवों ने ध्यान साधना की थी मान सरोवर की यात्रा के समय। तभी इस गुफा का नाम पाण्डव गुफा पड़ा है।''

दो घंटे से भी अधिक बाबाजी से वार्ता करते हो गए थे। किस साधना के कारण बाबाजी इस गुफा में रह रहे थे, यह तो मैं नहीं समझ पाया। धार्मिक ग्रन्थ भी मुझे नहीं दिखे। बाबाजी से मैंने चलने की आज्ञा चाही तो उन्होंने कहा, ''हरी अनंत, हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहि बहु विधि सब संता।।''

मैं सुखद स्मृतियाँ लिए झुकता-झुकाता गुफा के छोटे दरवाजे से निकलकर उसी मस्ती के साथ आनंद लेता हुआ वापस लौट रहा था। संयोग ही था घने जंगल में मुझे किसी हिंसक जीव का सामना नहीं करना पड़ा।

एम.डी. (एक्यु. एण्ड मैग्नैटिक), डी.ए.टी.,
एम.ए., एलएल.बी., योग विशेषज्ञ
स्थायी पता :- 90 बी, शिवपुरी,
मुरादाबाद- 244001 (उ.प्र.)
मो. 09456201857
E-mail :rakeshchakra00@gmail.com
Blog : rakeshchakrablogspot.com

चण्डीगढ़ के कलाग्राम में

दायरा

–गिरिजा कुलश्रेष्ठ

उस मोटे थुलथुल शरीर वाली औरत को, जो पाँच-छह बच्चों को लेकर बड़ी मुश्किल से बस में चढ़ पाई थी, इस बात की जरा भी फिक्र नहीं थी कि लोग उसकी तरफ मुस्करा रहे हैं और बच्चों को लेकर कुछ बातें कर रहे हैं। आज के समय में जब एक बच्चा भी समस्या है। ऐसे में लोग धड़ाधड़ बच्चे पैदा किये जा रहे हैं।

''कितना सीमित दायरा है इन लोगों के जीने का! चाहे ढंग का खाना-पहनना न मिले पर बच्चों से घर आँगन भरा होना चाहिए। जहाँ जाते हैं पूरी टोली को साथ लेकर चल देते हैं। इन्हें देखो, दो को गोद में सम्हाले हैं, दो को एक हाथ से पकड़े हैं और दो बच्चों को कमर से लिपटाए हैं। धन्य है। सरकार सारी शर्म और मर्यादा को ताक पर रखकर परिवार नियोजन के प्रचार में लगी है पर असर कहाँ।''

''क्यों मुन्ना नानी के घर गए थे?" पास ही बैठा एक व्यक्ति पूछे बिना न रह सका। बच्चे ने 'न' के लिये सिर हिलाया।

''तो मौसी के घर गए होंगे या फिर बुआ के..।" बच्चे ने तब भी नकारात्मक ही संकेत किया।

''तो बेटा फिर कहाँ गए थे सब लोग...?" एक और दूसरे व्यक्ति ने भी पूछ लिया।

''हम बताए देते हैं भैया, जो भी पूछना चाहो।" वह औरत बीच में ही बोल पड़ी। ''बच्चों को चिड़ियाघर दिखाने ले गए थे। माँ-बाप को टैम नहीं कि अपने बच्चों को कहीं घुमा फिरा लाएँ। हमने सोची चलो आज हमी जे 'सुभकारज' करलें।"

''ओह...तो ये... पहला वाला व्यक्ति झेंप कर बोला, ''मैंने समझा ये आपके बच्चे हैं। "

''लो ... भैया मानो तो सब अपने ही हैं।" अब लज्जित होने की बारी हम सबकी थी ।

मोहल्ला - कोटा वाला, खारे कुएँ के पास,
ग्वालियर, मध्य प्रदेश ऋभारतत्र

हफ्ता

–डॉ.दिनेश पाठक 'शशि'

कभी उसके पास कुछ छोटे वाहन हुआ करते थे जिन्हें वह सवारी ढोने के काम लेता था। लेकिन एक-दो वर्ष बाद ही उसका मन इस कार्य से ऊबने लगा था। कारण, थोड़ी-थोड़ी दूर पर खड़े सिपाहियों को उसे हफ्ता देना पड़ता था जिसमें आमदनी का एक अच्छा हिस्सा पुलिस और गुण्डों की भेंट चढ़ जाया करता था।

उसने सुना था कि सरकारी महकमे में भी वाहन किराये पर चलाये जाते हैं जिनमें कुछ निश्चित शर्तों के आधार पर एक-दो वर्ष के लिए वाहन लगाये जाते हैं। उसके बाद फिर से नवीनीकरण कराना पड़ता है। इस प्रक्रिया में पुलिस, सिपाही और गुण्डों को हफ्ता देने का भी कोई चक्कर नहीं होता।

कुछ अनुभवी व्यक्तियों की सलाह का लाभ उठाकर उसने अपने दो वाहन सरकारी विभाग में लगा दिए।

महीना पूरा होते ही वह दोनों वाहनों की एम.बी. भरवाकर सम्बन्धित अधिकारियों के पास गया तो पता चला कि एम.बी.पर हस्ताक्षर कराने के लिए भी सम्बन्धित प्रत्येक अधिकारी को कुछ कमीशन देना पड़ता है। न देने पर सम्बन्ध खराब होने के कारण भविष्य में कॉण्टरेक्ट मिलने का रास्ता बन्द होने का खतरा बना रहता है।

उसका मन पहले वाले काम व अबके काम की तुलना करने पर मजबूर था। पहले भी गुण्डों और पुलिस को हफ्ता भरना पड़ता था, न देने पर उनका कोप भाजन बनना पड़ता था और अब भी अधिकारियों को चुपके से मन्थली देना पड़ता है जिसका किसी को पता तक नहीं चलता।

28,सारंग विहार, मथुरा-281006
मोबा.09412727361 एवं 09760535755
ईमेल- drdinesh57@gmail.com

तेहरवीं के पहले

-जोगेश्वरी सधीर साहू

संध्या परदेस में एकदम से अकेले हो गई, जब पति को अटैक आया और 2दिन की भागदौड़ के साथ ही वो चले गये।

पति की तबियत पहले से ही ठीक नहीं थी। संध्या नये महानगर की उलझनों में खोई रही, पति की हालत बिगड़ती गई पर संध्या को लगता सुधार हो जायेगा उसे आयुर्वेदिक दवाओं पर बड़ा भरोसा था। बेटा भी रात-दिन एक कर रहा था पिता की सेवा में।

जब भी संध्या बाहर अपने काम से जाती बेड पर से पति बड़ी कातर दृष्टि से देखते। संध्या एकदम से बाहर निकल जाती समझ नहीं पाती क्या सोचते होंगे उसे उलझन होती थी।

उधर से लौटती तो बेग भरकर खाने के सामान लाती कि पति को इनमें से कुछ पसंद आएगा वो खाएंगे तो उनकी सेहत बनेगी।

एक तरह से वो लालची हो गई थी कि किसी तरह पति को बचा कर अपना सहारा बनाये रखे। पर बेटा जो सेवा कर रहा था यही कहता, ''ऐसे जीवन का क्या फायदा जिसमें वो चल नहीं पाते?''

अब तो पति घिसटने लगे थे पर टॉयलेट -बाथरूम जाते समय बेटे के साथ बड़े जोरों से बात भी करते कि कितने बजे पेशाब गये थे दवा खाई या नहीं.. या राजनीति की बात करने लगते तो कभी मौसम को कहते कि यहाँ कितना पानी आ रहा है?

संध्या पति से कहती आप अपने गाँव भी तो बात करो कभी, पर वो फोन नहीं लगाते। शायद वो अपनी नई यात्रा की तैयारी में लग गये थे।

संध्या को कहते -''बस! अब मत लाना ये फल ... ये दवा मत लाना... ये चीज मत लाना..।''

संध्या नाराज होती, ''कुछ भी नहीं लाना तो खाना क्या है? अपने पाँव पर खड़े नहीं होना है क्या? लड़का कब तक उठाएगा?''

तो कहते -''चलूँगा ना...''

बस कहते ही रहे कि मोटा हो जाऊँगा तो घूमने जाऊँगा ....

एक दिन बेटे से बोले, ''यहाँ का बड़ा पाव खाकर भी देखूँगा।''

जबकि रास्ते में बड़ा पाव नहीं खाया था। बहुत कमजोरी आई और लकवे का अटैक आ गया फिर भी संध्या ने बड़ी हिम्मत से दवा की पर सब धरा रह गया।

एक रात चुपचाप पति को अटैक आया, संध्या नहीं ध्यान दे पाई। उन्हें दवा देकर दाल बनाने में लग गई। तब तक वो निश्चल हो गये थे मुख से आवाज ही नहीं निकल पाई। बता ही नहीं सके कि क्या लग रहा है कैसे हो गया। बस अपनी उंगलियों को सिर में घिस रहे थे।

पति की ऐसी हालत देख संध्या बहुत रोई फिर सबको खबर की और खुद को संभाल लिया बेटे को कौन देखता यदि वो आपा खोती।

एक बार आँसू बहाने के बाद उसने नहीं रोना धोना किया फिर से, क्योंकि सबकुछ देखना था। मुंबई जैसे शहर की हाई सोसाइटी की फार्मेलिटी का निर्वाह और बहुत सारे क़ानून कायदों भी तो को निभाना...

भाई-बहन और जीजा वक़्त पर आ गये संध्या के

मित्र नमेश जी ने सब भागदौड़ की तब अंतयेष्टि हो पाई समय से। अगले दिन सबकुछ करके भाई-बहन भी जैसे प्लेन से आये थे वैसे ही चले गए।

संध्या बेटे के साथ पति की यादों की जुगाली करती और घर में नमक का पोछा व धूप-दीप लगाती। तीसरे, दशवें दिन समुद्र किनारे तर्पण कर आई। कुत्तों और कौवों के झुण्ड को खिला आई। जितना सामान और कपड़े पति के थे सब दान कर दिए या फेंक आई।

इतना आसान वक़्त नहीं, था बेटे की आँखों में सूनापन देख अपना दुख भुलाकर हर काम करने निकली तो एक पेढ़े की दुकान वाला बोला -

''आप इतना सामान कहाँ ले जाते हो?''

संध्या बोली, ''आज पति की तेरहवीं का तर्पण है, समुद्र किनारे ले जाकर अर्पण करूँगी।''

तो वो राजस्थानी मिठाई की दुकान वाला बोला ''तेरह दिन हो गये?''

संध्या गहरी साँस भरकर बोली, ''हाँ! समय जाते देर नहीं लगती....।'' हालांकि ये वक़्त बहुत कठिनाई से गुजरा था पर बोल रही थी।

राजस्थानी दुकान वाला बोला, ''अभी तेरह दिन नहीं हुए आप बाहर घूम रहे हो.. हमारे में तो घर से निकलते ही नहीं....।''

संध्या को विधवा स्त्री पर लादी गई पाबंदियों की याद आई। वह बिना कुछ बोले आगे बढ़ गई। पति के नाम से तर्पण और दान -पुण्य करने हैं, बेटे को संभालना है। अपनी जिंदगी को आगे बढ़ाना है ताकि पति की आत्मा को कष्ट नहीं हो। वे कर्मकांड को ज्यादा नहीं मानते थे। ग्रंथ पढ़ते थे सभी जीवों को खिलाते थे और अपने पाँव चलकर सब काम करते थे। जब चल नहीं सके तो सहारे से मात्र डेढ़ माह जीवित रहकर निकल गये ताकि संध्या और बेटे का जीवन मेहनत से, लगन से आगे बढ़े। उन्हें घुट कर जीना पसंद नहीं था।

संध्या को उस दुकान वाले की दकियानूसी सोच पर तरस आया जो आज के कर्म युग में औरत को कठपुतली बनाकर बंदी बनाने की रवायतों और ढकोसलों का बोझ लादे फिर रहे हैं।

संध्या ने दुकान से बाहर आकर सुकून की साँस ली और पति की यादों को, उनकी दी गई शिक्षा और उन्हीं के बताये रास्ते पर जीवन में आगे बढ़ने के निश्चय के साथ जीवित रखने का निर्णय कर आगे बढ़ गई।

विरार (पूर्व) मुंब
9399896654

साहित्याश्रय चण्डीगढ़ में आरती प्रकाशन की कुछ पुस्तकें

सात मीठे पानी की झीलें

लोकेष्णा मिश्रा

प्यारे बच्चों आज मैं आपको उत्तराखण्ड के नैनीताल में स्थित सात तालों, सात मीठे पानी की झीलों के एक समूह के बारे में बताती हूँ। सुनो एक कहानी आपको सुनाती हूँ

सुनोगे न! तो सुनो थोड़ा ध्यान लगा कर। नैनीताल से करीब 22 किलोमीटर की दूरी पर एक स्थान सातताल है। पता है यहाँ पहुँचने के लिए घने जंगलों से होकर गुजरना पड़ता है। ठीक जंगल के बीच में यहाँ सात ताल हैं इसलिए इस स्थान को सातताल के नाम से जाना जाता है।

इन सतातलों के नाम हैं- राम ताल, सीता ताल, लक्ष्मण ताल, हनुमान ताल, सूखा ताल, नल दमयंती ताल और गरुड़ ताल।

स्थानीय लोगों का कहना है कि यहाँ भगवान राम, सीता और लक्ष्मण रहते थे, जिस कारण से इन तालों को यह नाम दिए गए।

सूखा ताल बरसात के बाद भी पानी से भरा दिखता है। बीते दिनों हुई भारी ने बरसात ने नैनीताल की सूखाताल झील को एक बार फिर से पानी से भर दिया है, जिससे वह अपने खोए हुए अस्तित्व में वापस आ गई है। बरसों से सूखी पड़ी सूखाताल झील काफी सुंदर दिखती है।

जानते हो! नल दमयंती ताल के बारे में बताया जाता है कि राजा नल और रानी दमयंती यहाँ पर आये थे और उन्होंने यहाँ अपना महल बनाया। बाद में इस ताल में ही उनकी समाधि बन गई। इसलिए इसे नल दमयंती नाम दिया गया। इस ताल का आकार पंचकोणी है। अर्थात पाँच कोण वाला। कोण तो गणित में पढ़ते हो न आप !

गरुण ताल को दानव झील या राक्षस ताल के रूप में भी जाना जाता है। यह वह झील है जहाँ पाण्डव और उनके भाइयों की परिक्षा ली जाती है। जिसमें युधिष्ठिर ही सफल हो पाते हैं। तो बच्चों कैसी लगी आपको ये सात तालों की कहानी ?

श्री राम औषधालय परिसर,
हल्द्वानी, जिला नैनीताल (उत्तराखण्ड)

लघुकथा समीक्षात्मक लेख आमंत्रित ।

साहित्यिक, पारिवारिक, सामाजिक पत्रिका, वृन्दा (मासिक), हेतू समीक्षात्मक लेख आमंत्रित।

अंतर्राष्ट्रीय स्त्री कथा विशेषांक एवं राष्ट्रीय स्त्री कथा विशेषांक हेतु ....

इस विशेषांक हेतु ख्याति प्राप्त लेखक व उपन्यासकार के नारी पात्रों पर अपनी कलम चलानी है। जैसे... डी एच लारेंस का उपन्यास... वुमन इन लव / इजाडोर डंकन का... माय लाइफ/ मालिन का... नार्मल मिलर/ माक्सिम गागह्न का...माँ/ देशांनरी फ्रेंच का... मुख्तार माई/ बर्नार्ड शा का... नाटक आदि। ऐसे ही लेखक....फ्योदोर दास्तोएवस्की/ फ्रांसिस ब्रेट हार्ट/ उसुर्ल/ ब्यूम/ लईस/ गोल्डिंग एनातोले फ्रांस / मेरी कोरेली/ कास्मों हैमिल्टन ...आदि रचनाकारों के कहानी एवं उपन्यास के नारी पात्रों पर अपने विचार, समीक्षा पत्र व सारांश के रूप में लिखना है लगभग 5 पेज के सारांश हो सकते हैं ।

राष्ट्रीय स्त्री कथा विशेषांक हेतु

महाभारत की नारी पात्र, रामायण के नारी पात्र/जातक कथाएँ/ वैदिक कथाएँ/ बौद्ध कथा, कहानियाँ/ हितोपदेश कहानियों के नारी पात्र। मुंशी प्रेमचंद्र /अमृता प्रीतम /अमृता शेरगिल /कृष्णा सोबती/आदि रचनाकारों की कहानी एवं उपन्यास के नारी पात्रों पर अपने विचार आदि।

आजादी का अमृत महोत्सव

-डॉ आराधना मिश्रा

आज हम अपनी आजादी की 77वीं वर्षगांठ मनाने जा रहे हैं। इन 77 वर्षों में भारत में विभिन्न क्षेत्रों में तमाम उपलब्धियाँ हासिल की हैं और निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। यदि हम आजादी के तुरंत बाद की स्थिति पर नजर डालें तो 200 वर्षों से गुलामी की जंजीर में जकड़ा भारत बहुत ही चिन्तनीय अवस्था में रहा। भारत के संसाधनों की ब्रिटिश लूट ने ब्रिटेन में तो औद्योगिक क्रान्ति ला दी पर हम कंगाल होते चले गये थे। कृषि प्रधान देश की खेती पर मानों बुरी नजर लग गयी थी। आजादी के बाद के हिन्दुस्तान की तस्वीर कवि के शब्दों में,-

'देश हमारा भूखा नंगा
घायल है बेकारी से,
मिले न रोजी-रोटी भटके
दर-दर बने भिखारी से।।

गरीबी, बेरोजगारी जैसी विकराल आर्थिक सुरसाएँ सामने थीं, निरक्षरता, छुआछूत जैसी सामाजिक समस्याएँ तो नव स्वाधीन भारत के सामने दुर्गम पहाड़ी की तरह खड़ी थीं। तब की स्थिति नागार्जुन प्रभृति साहित्यकारों की आँखों ने जो देखा..

'सामन्तों ने कर दिया प्रजातंत्र का होम,
लाश बेचने लग गए खादी पहने डोम'.....

हमने एक परिपक्व राष्ट्र के रूप में सबल, सक्षम और जीवन्त लोकतंत्र के रूप में प्राथमिकताएँ तय कर इन समस्याओं का सामना करने का निश्चय किया। परिणाम मिलने लगे, तथाकथित अनुसूचित जाति में जन्मे बाबू जगजीवन राम का सांसद ही नहीं तो मंत्री बनना, के. आर. नारायणन का प्रथम नागरिक बनना महज संयोग नहीं था और न ही श्रीमती इन्दिरा गाँधी का प्रधानमंत्री बनना संयोग था। आज सत्ताशीर्ष पुरुषवादी कुलीनों की जागीर नहीं। पाँच प्रमुख राज्यों में महिलाएँ मुख्यमंत्री के पद पर, यहाँ तक कि लोकसभाध्यक्ष के पद तक महिलाएँ पहुँचने लगीं। भारत के प्रथम नागरिक के रूप में पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल और राष्ट्रपति के पद पर आसीन होने को तैयार अनुसूचित जनजाति से आने वाली श्रीमती द्रौपदी मूर्मू का चयन हमारे फौलादी लोकतांत्रिक ढांचे का प्रमाण है।

भारत आज 2.7 लाख करोड़ रुपए से बढ़कर 57 लाख करोड़ रुपए की तीव्रगति वाला विकासशील अर्थव्यवस्था हो गया है। तमाम बाधाओं से जूझते हम स्वाभिमान युक्त स्वावलंबन का मूलमंत्र लिए आगे चलते रहे। हथियार, विमान, उपकरण ही नहीं तो अनाज, दवाओं तक के लिए दूसरों का मुँह ताकने वाला भारत आज बड़े निर्यातकों में शुमार हो रहा है। कोविड महामारी का सफलतापूर्वक सामना, टीके का समय रहते आविष्कार ही नहीं किया बल्कि दुनिया को टीके बांटने वाले देश के रूप में हम उभरे हैं।

हमने अपने दम पर अंतरिक्ष कार्यक्रमों में सफलता अर्जित की। अंतरिक्ष तकनीक में शून्यता के बावजूद आज भारत इस क्षेत्र में सबसे शक्तिशाली राष्ट्रों में से एक है। परमाणु ऊर्जा समेत विज्ञान

प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भर भारत परमाणु शक्ति का दर्जा प्राप्त कर चुका है। लगभग 800 वर्षों से गुलामी के घने अंधेरे को झेलने वाले भारत ने,

''ले आए हैं तूफान से किश्ती निकाल के...''

को गुनगुनाते सिर्फ अपनी ही नहीं अनेक देशों को भीषण संकट से निकालने में मदद की है। यही नहीं भारत आज दुनिया की चार बड़ी सैन्य शक्तियों में से एक है।

वैभव सम्पन्न सक्षम राष्ट्र बनने की दिशा में हम धीमे-धीमे किन्तु मजबूत कदमों से बढ़ रहे हैं। 77 वर्षों की साधना में आई अप्रिय समस्याओं से जूझने का अनुभव आगे की कंटीली राह में हमारा पाथेय होगा। प्राप्त अमृत का मंथन कर आगे बढ़ना ही अमृत महोत्सव का संदेश है। -जय हिन्द

वा 2 डी -163
त्रिवेणीपुरम, झूंसी
प्रयागराज द्ध उ प्र ऋ
पिन -211019

बेहद गुणकारी है कटहल का सेवन

आजकल कटहल का मौसम है। जहाँ देखिए तहाँ बाग-बगीचों, खेत-खलिहानों में कटहल के वृक्ष आपको दिखाई दे ही जाएंगे। हो सकता है आपके घर में भी एक-आध वृक्ष कटहल का लगा हो। ऐसे में एक ही सब्जी खाते-खाते आप उक्ता जाते होंगे न? फिर आप अपने घर की चीज़ को फेंकना भी तो नहीं चाहते। आइए आपको कुछ व्यंजन बताएँ जिनको बना कर आप अपना ज्ञान भी बढ़ा सकते हैं और घर की चीज़ को उपयोग कर पैसा भी बचा सकते हैं और इसके पौष्टिक गुणों से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

सब्ज़ी-कटहल के टुकड़ों को थोड़ी देर उबाल लें। दूसरे बर्तन में घी-तेल डाल कर गैस पर दूसरी तरफ़ रख दें। घी गर्म होने पर उसमें हींग का बघार दें, फिर अपनी पसंद के द्धसब लोग प्याज-लहसुन नहीं खातेऋ मसाले भूनकर उबला हुआ कटहल छोंक दें। कटहल की स्वादिष्ट सब्जी तैयार है। यदि इसमें भुने पिसे मेथी दाने का प्रयोग करें तो महक और स्वाद दो गुना हो जाता है।

अचार-कटहल के बड़े-बड़े टुकड़े काट कर हल्का उबाल लें। फिर पानी से निकाल कर ठण्डा होने दें और तीन-चार घण्टे धूप में सुखाएँ। अब इसे अपने स्वादानुसार नमक-मिर्च, हल्दी और पिसी हुई राई मिला कर मिट्टी अथवा काँच के वर्तन में रक्खें। तीसरे दिन इसमें सरसों का तेल डाल कर भर दें। बस दो दिन बाद आप इसे खा सकते हैं। कटहल का अचार सिरका डाल कर भी बनाया जाता है। इसमें एक किलो कटहल में 100 ग्राम सरसों का तेल टकडों को भूनने के लिए काम में लाया जाता है और कटहल उबाला नहीं जाता। हाँ सिरका एक किलो में एक बोतल पड़ता है। सिरके वाला अचार पाचन शक्ति भी बढ़ाता है।

इसके बीज सुखा कर भूने जा सकते हैं। कोंकण में इसके गूदे को सुखा कर पीसकर आटा भी बनाया जाता है जिससे रोटी बनाई जाती है। इससे खीर, कढ़ी तथा हलुआ भी बनाते हैं। आप मान गए न कि कटहल एक उपयोगी फल है?

(धारावाहिक उपन्यास)

पारस

-आशा शैली

आखिर वह दो भाइयों की लाडली बहन थी, पर इस समय वातावरण की गम्भीरता ने उस पर भी अधिकार कर रखा था। कैलाश भी आकर सामने बिछे दूसरे पलंग पर बैठ गई। सत्या ने बारी-बारी दोनों के चेहरों पर सवालिया निगाह डाली। आखिर दीवान चन्द त्रिखा ही बोले,

''सत्या! सब कुछ तेरे सामणे ही है। बता इस झल्ले का अब क्या होगा?''

''किसकी बात कर रहे हैं वीर जी?''

''मैं सोमे की बात कर रहा हूँ। बड़ी मुश्किल से तो दूसरे ब्याह के लिए तैयार किया था उसे, वह भी ना रही। अब क्या ये फिर मान जाएगा?''

''काका वीर को मेरे ख्याल में कुछ वकत देना चाहिए। उन्हें ना छेड़ा जाए। थोड़ा वकत गुजरने के बाद उनके जखम भर जाएँगे फिर सोचेंगे इस बारे में। तब तक कोई रिश्ता भी आ ही जाएगा।''

''सत्या ठीक कह रही है। अभी हमें इस बारे में कोई बात नहीं करनी चाहिए।''कैलाश त्रिखा ने भी अपनी राय रखी।

''पर वीर जी, मैं तो दूसरी बात कर रही थी।''

''बोल सत्या! तू तो हम दोनों भाइयों की लाडली बहन है, तेरी कोई बात हमने कभी काटी है क्या? बोल! क्या कहना है??''

''वो, वीर जी! आपको पता है, मेरा इलाज चल रहा है।''वह बात तो भाई से कर रही थी पर उसकी आँखें जमीन में धंसी जा रही थीं।

''हाँ! देसराज होरां ने बताया था। क्या हुआ?''

''वह न....''वह समझ नहीं पा रही थी कि भाई को क्या बताए। भाभी को बताती पर वह भी तो वहीं थी।

''सत्या संगणे दी कोई लोड़ नईं (झिझकने की जरूरत नहीं है)। पर तूँ बोल तो सही क्या हुआ? बताएगी ही नहीं तो क्या पता चलेगा।'' कैलाश उसकी झिझक को समझ रही थी।

पिछले महीने मेरी रपोट आई थी....."उसने बात अधूरी छोड़ दी।

''फिर.....?''

सत्या ने कैलाश की ओर देखते हुए इनकार में सिर हिला दिया। उसकी आँखों में आँसू छलक आए।

''ओह!''कैलाश शायद उसकी बात को समझ गई थी पर दीवान चन्द्र त्रिखा हैरानी से कभी पत्नी और कभी बहन का मुँह देख रहा था। कैलाश ने आँखों ही आँखों में उन्हें चुप रहने का संकेत किया, फिर सत्या की ओर देखते हुए पूछा, ''अब क्या करना चाहती हो तुम?''

''मैं सोच रही हूँ कि परसे को अपने पास रख लूँ। अपना बच्चा अपने पास रहेगा तो उसका भी भला है और मेरा भी भला।''

''पर तेरे ससुराल वाले....?'' त्रिखा जी के मुँह से निकला।

''हाली (फिलहाल) तो कोई कुझ नहीं कहेगा। फिर की फिर देखी जाएगी। वैसे भी अब काका वीर जी को घर और अपने आप को सम्भालने के लिए छोड़ देना चाहिए। वे पारस की तरफ से बेफिक्र होकर अपने आप को सम्भाल लें।''

''काका जी मान जाएँगे?'' कैलाश असमंजस में थी।

''हर्ज भी क्या है, हम कोशिश करके देखते हैं। शायद मान ही जाए।'' कहकर त्रिखा जी बाहर निकल गए।

.....

सत्या इस बार पारस को यह कहकर अपने साथ ले गई थी कि अब वह उसके पास ही रहेगा और वहीं पढ़ेगा, इसलिए त्रिखा जी को उसकी चिन्ता कम और सोमनाथ की चिन्ता अधिक थी।

दस्तूर के मुताबिक सोमनाथ के लिए फिर रिश्ते आने लगे थे। पर अब तो वह अपने भाग्य को ही कोसने लगता। इस बार सत्या ने भाई के तीसरे विवाह के लिए प्रयास किए पर सोमनाथ का मन उचट गया था। जब भी सत्या उसके विवाह की बात लेकर मायके आती तो वह यही कहता,

''देख सत्तो! यह बात यहीं ठप्प दे (समाप्त कर दे) अब मेरे भाग में होता तो पारस की माँ ही क्यों मरती, जिसने इस घर को सब कुछ दिया। फिर तुम सब लोगों के कहने से मैंने कर भी ली। पर किस्मत में ही न हो तो कोई क्या करे। अब कोई मेरी शादी का नाम न ले बहुत हो गई शादी।'' इसके बाद सत्या भी मन मारकर चुप लगा गई।

सोमनाथ एक बार फिर अकेला हो गया। अब सोमनाथ घर-बार छोड़कर अपने बाग़ में डेरा डालकर बैठ गया था। घर में ताला लगा हुआ था, पर एक चाबी सत्या के पास भी थी। वह कभी भी आकर घर की साफ-सफाई कर जाया करती थी। उसकी ससुराल ज्यादा दूर नहीं थी। सत्या अपना सच जानकर पारस में ही अपना सब कुछ देख रही थी पर एक डर भी उसके अन्दर बैठा हुआ था कि सोमनाथ कभी भी आकर पारस को ले जा सकता था। तब? फिर उसका क्या होगा?

चुलबुला और अबोध पारस बुआ का प्यार पाकर काफ़ी शैतान हो गया था। अभी उसे पता ही नहीं था कि उसने क्या खोया है। चार साल की उम्र में सारी उठा-पटक के बीच वह सबसे ज्यादा सत्या के ही सम्पर्क में रहा था इसलिए उसे सत्या ही सबसे ज्यादा अपनी लगती थी। संतान की आशा न रहने से और कुछ पत्नी की खुशी को देखते हुए अब तक देसराज का रवैया भी उसके प्रति नरम हो गया था, फिर वह चाहे जो भी कारण हो।

.....

पंजा साहब में बदली होते ही सरकारी क्वार्टर मिल गया था देसराज को, अब वह सत्या को भी ड्यूटी पर आते समय अपने साथ ले आया था। मिला हुआ तो अर्दली भी था, फिर भी घर में सत्या और पारस दो ही लोग थे। साहब की आदत, शाम का खाना खाकर टहलने की थी। टहलने जाते समय जब देसराज, पारस को साथ ले लेते तो सत्या भी खुश हो जाती और पारस भी।

उस दिन वे टहलते हुए पड़ोस के हलवाई की दुकान की तरफ जा निकले तो हलवाई की बाँछें खिल गईं,

''आओ....आओ जी, जी आएयां नूँ। धन्न भाग असाडे, जे दर्शन होए तुहाडे। (हमारे धन्य भाग जो आपके दर्शन हुए)।'' हलवाई ने तुरन्त लकड़ी की भारी कुर्सी कपड़े से झाड़कर साफ की, पर देसराज बैठे नहीं।

''नहीं वीर जी, बस रोटी खाके ज़रा हज़म करने निकला था। बैठूँगा नहीं।''

''एक गलास दुध....साडी दुकान नू धन्न करो बाऊ जी।''

''नहीं। फिर कभी। इस समय पेट भरा है।'' कहकर वे आगे बढ़ने लगे तो दुकानदार ने बर्फी के तीन-चार टुकड़े उठाकर पारस के हाथ में पकड़ा दिए, ''अब इसे मना मत करना। बच्चा है जी।''

''चलो, ले ले पारस। चाचा प्यार से दे रहे हैं।'' पारस ने बर्फी ले ली। फिर तो जब भी पारस फूफा के साथ टहलने निकलता तो उसे कभी बालूशाही, कभी शकरपारे या बर्फी मिल ही जाते। हलवाई इस तरह से साहब को खुश रख कर अपने लिए रास्ता निष्कंटक हो गया समझता था, पर पारस क्या समझता था यह उनको पता नहीं चल सकता था। पारस बहुत खुश था कि उसे मुफ्त में मिठाई खाने को मिलती है। पारस को यह समझ में आ रहा था कि हलवाई उसे मिठाई मु फ्त में दे रहा है पर क्यों, यह तो उसे पता ही नहीं था।

उस दिन गली के लड़के धूप में खेल रहे थे, पारस भी खेल रहा था उनके साथ। खेलते हुए वे हलवाई की दुकान की तरफ जा निकले।

''पारस कहता है कि उसे तो बिना पैसे के मिठाई मिलती है क्योंकि वह थानेदार का बेटा है'' करमे ने दोस्तों को बताया तो सुक्खा जो उनमें सबसे बड़ा था झट से बोल पड़ा, ''पारस झूठी शान दिखा रहा है। ऐसे कैसे मुफ्त मिठाई मिलती है?''

रामदास बोला, ''क्यों ओए परसे तू झूठ क्यों बोलता है?''

''नहीं, सचमुच! मैं थानेदार का बेटा हूँ न!'' पारस ऐंठ दिखाने लगा।

''चल! लाकर दिखा।'' दूसरे ने कहा।

''हाँ लाऊँगा न।''

''लगी शर्त?''

''हाँ लगी शर्त।''

बच्चों की आपस में शर्त लग गई। वह शर्त जीतने और खुद को सच्चा साबित करने के लिए पूरी टोली के साथ हलवाई की दुकान पर पहुँच गया और जान-बूझकर दुकान के पास जाकर जेब टटोलने लगा तो हलवाई ने पूछ लिया,

''की हो गया काका?''

''कुछ नहीं चाचा जी, पैसे किदरे गिर गए।''

''कोई गल्ल नईं। की चाईंदै? बर्फी?'' पारस ने हाँ में सिर हिलाया तो दुकानदार ने उसे बर्फी के कुछ टुकड़े कागज़ में लपेटकर दे दिए। पारस शर्त जीत चुका था। उसने मित्रों को हलवाई की दी हुई बर्फी खिलाई।

अब उसके मित्रों की चण्डाल-चौकड़ी अक्सर ही उससे मिठाई लाने का आग्रह करने लगी। कुछ दिन तो हलवाई मिठाई देता रहा पर धीरे-धीरे मात्रा में कमी आने लगी। फिर एक दिन हलवाई ने पैसे लाने को कह ही दिया।

''काका, घर से पैसे लेकर आ तो मिठाई जितनी मर्जी ले जा।''

देसराज की ड्यूटी उन दिनों रावलपिण्डी से बाहर थी। बुआ से पैसे माँगने में डर लगता था। पता नहीं बुआ डांट देगी या कहीं भाइया जी से तो नहीं कह देगी, बड़ी डांट पड़ेगी। पारस भारी सोच में पड़ गया। क्या करे? दोस्तों को मिठाई नहीं खिलाई तो किरकिरी हो जाएगी। सभी कहेंगे, 'बड़ा बनता है थानेदार का बेटा, निकल गई न फलूस (गुब्बारे) की हवा?' लेकिन हलवाई चाचा ने तो साफ़ ही कह दिया पैसे लाने के लिए। अब क्या किया जाए?

क्रमशः

.....

सात मीठे पानी की झीलें

लोकेष्णा मिश्रा

प्यारे बच्चों आज मैं आपको उत्तराखंड के नैनीताल में स्थित सात तालों, सात मीठे पानी की झीलों का एक समूह है, उसके बारे में बताती हूँ। सुनो एक कहानी आपको सुनाती हूँ

सुनोगे न! तो सुनो थोड़ा ध्यान लगा कर,

नैनीताल से करीब 22 किलोमीटर की दूरी पर एक स्थान सात ताल स्थित है। पता है यहाँ पहुँचने के लिए घने जंगलों से होकर गुजरना पड़ता है। ठीक जंगल के बीच में यहाँ सात ताल हैं इसलिए इस स्थान को सातताल के नाम से जाना जाता है।

इन सतों तालों के नाम हैं- राम ताल, सीता ताल, लक्ष्मण ताल, हनुमान ताल, सूखा ताल, नल दमयंती ताल और गरुड़ ताल।

स्थानीय लोग बताते हैं कि यहाँ भगवान राम, सीता और लक्ष्मण रहे थे, जिस कारण से इन तालों को यह नाम दिए गए।

सूखा ताल बरसात के बाद भी पानी से भरा दिखता है। बीते दिनों हुए भारी ने बरसात नैनीताल की सूखाताल झील को एक बार फिर से पानी से भर दिया है, जिससे वह अपने खोए हुए अस्तित्व में वापस आ गया है। बरसों से सूखी पड़ी सूखाताल झील काफी सुंदर दिखती है।

जानते हो! हमारे देश के इतिहास में राजा नल-दमयंती की कथा बहुत प्रसिद्ध है। दमयंती राजा नल की पत्नी थी। नल दमयंती ताल के बारे में बताया जाता है कि राजा नल और रानी दमयंती यहाँ पर आये थे और उन्होंने यहाँ अपना महल बनाया। बाद में इस ताल में ही उनकी समाधि बन गई। इसलिए इसे नल दमयंती नाम दिया गया। इस ताल का आकार पंचकोणी है। अर्थात पांच कोण वाला। कोण तो गणित में पढ़ते हो न आप !

गरुड़ ताल को दानव झील या राक्षस ताल के रूप में भी जाना जाता है। यह वह झील है जहाँ पांडव और उनके भाइयों की परिक्षा ली गई थी। इस ताल के रक्षक यक्ष ने पाँौं भाइयों से प्रश्न पूछे थे, जिनके उत्तर न दे पाने के कारण चारों भाई बेहोश हो गए थे। बाद में युधिष्ठिर ने यक्ष को सही जवाब देकर संतुष्ट किया और वे ही सफल हो पाते हैं।

तो बच्चों कैसी लगी आपको ये सात तालों की कहानी ?

श्री राम औषधालय परिसर, हल्द्वानी,
जिला नैनीताल (उत्तराखण्ड)
7906458700

लगन

अंजना छलोत्रे 'सवि'

छंटनी का आदेश आते ही श्वेता की धड़कन बढ़ गई अभी नौकरी पर लगे मात्र आठ माह ही हुए और ये हेड आफिस से गाज आ गिरी।

श्वेता अपना मूल्याकंन करने लगी, क्या-क्या कमियाँ है उसमें, जिसके तहत उसे निकालने की पूरी पुख्ता व्यवस्था है, एक तो नई, उपर से खूब छुट्टी लेती है, आफिस की कार्यशैली में हमेशा गड़बड़ होती है और वह अपने सहकर्मियों के साथ रूखा व्यवहार करती है। सोच-सोच कर श्वेता का हृदय काँपने लगा, इतनी कमियाँ हैं। सिनियर तो चाहेंगे कि उसका पत्ता कट हो जाये।

श्वेता अब क्या करे, आफिस के सभी कर्मचारी छोटे बड़े साहब के घर बारी-बारी से हो आये हैं। श्वेता ही है जो नहीं गई। अब उसे अपनी अकड़ पर कोफ़्त हो रही थी पर वह करे भी क्या उसको चापलूसी और द्विअर्थी भाषा में की गई बातें कभी पसंद नहीं आतीं, वह तड़ से जबाब दे देती है।

पूरा आफिस अपने-अपने जुगाड़ लगाने में भिड़ा है और सभी अपनी-अपनी रोजी बचाने में। श्वेता आठ दिन के मानसिक द्वन्द्व के बाद पस्त हो गई, जो होना होगा। काहे को चिंता करे जब तक है तब तक मन लगा कर काम करे फिर देखेंगे क्या होता है।

श्वेता ने उस समय मन लगाकर काम किया जब किसी का मन काम करने में नहीं लगा, फिर क्या था श्वेता छंटनी से बच गई दिग्गज और नेता जो अपने को सिनियर कहते थे निकाल दिए गये।

जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8,
एक्सटेंशन, भोपाल 462 039

लोकप्रिय प्रशासक के साथ ख्याति प्राप्त साहित्यकार कृष्ण कुमार यादव को 'साहित्य शिल्पी सम्मान'

चर्चित ब्लॉगर और साहित्यकार एवं सम्प्रति वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव को विशिष्ट कृतित्व, रचनाधर्मिता और प्रशासन के साथ-साथ सतत् साहित्य सृजनशीलता हेतु सिक्किम के राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य ने 'साहित्य शिल्पी सम्मान' से सम्मानित किया। राष्ट्रीय मासिक पत्रिका 'सच की दस्तक' द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर में आयोजित सम्मान समारोह में 28 अगस्त को उक्त सम्मान प्रदान किया गया। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री कृष्ण कुमार यादव की विभिन्न विधाओं में सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। देश-विदेश की तमाम पत्र-पत्रिकाओं और इण्टरनेट पर निरंतर प्रकाशन के साथ आकाशवाणी व दूरदर्शन से भी विभिन्न विधाओं में आपकी सृजनात्मकता का प्रसारण होता रहता है। आपके कृतित्व पर एक पुस्तक 'बढ़ते चरण शिखर की ओर : कृष्ण कुमार यादव' भी प्रकाशित हो चुकी है।

गौरतलब है कि श्री कृष्ण कुमार यादव लोकप्रिय प्रशासक के साथ ही सामाजिक, साहित्यिक और समसामयिक मुद्दों से सम्बंधित विषयों पर प्रमुखता से लेखन करने वाले साहित्यकार, विचारक और ब्लश्वगर भी हैं। देश-विदेश में विभिन्न प्रतिष्ठित सामाजिक-साहित्यिक संस्थाओं द्वारा आपको शताधिक सम्मान और मानद उपाधियाँ प्राप्त हैं। उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव द्वारा 'अवध सम्मान', पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी द्वारा 'साहित्य-सम्मान', छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री शेखर दत्त द्वारा 'विज्ञान परिषद शताब्दी सम्मान' से विभूषित आपको अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉगर्स सम्मेलन, नेपाल, भूटान और श्रीलंका में भी सम्मानित किया जा चुका है। विभागीय दायित्वों और हिन्दी के प्रचार-प्रसार के क्रम में अब तक श्री यादव लंदन, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड, दक्षिण कोरिया, भूटान, श्रीलंका, नेपाल जैसे देशों की यात्रा कर चुके हैं। आपके परिवार को यह गौरव प्राप्त है कि साहित्य में तीन पीढ़ियाँ सक्रिय हैं। आपके पिताजी श्री राम शिव मूर्ति यादव के साथ-साथ आपकी पत्नी श्रीमती आकांक्षा भी चर्चित ब्लॉगर और साहित्यकार हैं, वहीं बड़ी बेटी अक्षिता (पाखी) अपनी उपलब्धियों हेतु भारत सरकार द्वारा सबसे कम उम्र में राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित हैं।

इस अवसर पर प्रो. गोपबन्धु मिश्र, पूर्व कुलपति श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात, प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, अन्तर विश्वविद्यालय, अध्यापक शिक्षा केन्द्र ब्बी.एच.यू.ऋ, वाराणसी, डॉ. नागेन्द्र सिंह, महामना मदन मोहन मालवीय हिन्दी पत्रकारिता संस्थान, श्री रमेश जायसवाल, विधायक पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर सहित तमाम गणमान्य जन उपस्थित रहे।